इतिहास सामान्य जानकारी

- **भारतिय अपने इतिहास के प्रति जागरूक थे ओर उन्हे इतिहास लेखन की जानकारी थी**
- **डब्लयू एच मौरलेण्ड ने राजनैतिक इतिहास आर्थिक विकास के सन्दर्भ में लिखा है।**
- सिक्कों का अध्ययन न्यूमिस्मेटिक्स कहलाता है।
- **शिलालेखों में बाद के परिवर्तन संभव नहीं है।**
- **पैगम्बर मो0 साहब के कथन हदीस कहलाते है।**
- **ग्राउंड स्टोन टूल्स कृषि अर्थ्व्यवस्था का घोतक है।**
- **रोमिला थापर प्राचीन भारतिय इतिहास से संबधित है।**
- **डी.डी. कौसम्बी ने एन इन्ट्रोडक्शन टू द स्टडी आफ इण्डियन हिस्ट्री लिखि**
- **आर.एस शर्मा के अनुसार धार्मिक फायदा उठाने वालों को अनुदत भूमि से सामन्तवाद प्रारंभ हुआ।**

पूर्व पाषाण काल (35000ई0पु0 से 10000ई0पू0)

- पहली खोज राबर्ट ब्रुस ने पल्लवरम(मद्रास) के निकट की।
- पूर्व पाषाण काल की सबसे प्राचीन संस्कृति रावलपिंडी के निकट सोहन नदी की घाटी जिसे सोहन संस्कृति नाम दिया गया है।
- इस युग के औजार बटिकाश्म उपकरण कहलाते हैं।जिनमें गंडासे और खंडक प्रमुख है।
- नदी की घारा में बहकर आने वाले गोल पत्थरों के टुकड़े पेबुल कहलाते थे।
- निवास प्राकृतिक गुफाएं एंव शैलाश्रय
- उधोग आखेट, भोजन एकत्रीकरण एंव पाषाण उपकरण निर्माण
- भोजन कच्चा मांस, कंद व फल

मध्य पाषाण काल (10000ई0पु0 से 5000ई0पू0)

- निवास प्राकृतिक गुफाएं , शैलाश्रय व वृक्ष
- उधोग आखेट, भोजन एकत्रीकरण, पशुपालन एंव सुक्ष्म पाषाण उपकरण निर्माण

- पत्थर के औजारों के साथ साथ शल्क अथवा फलेक के बने औजारों का प्रयोग होता था जिन्हे माईक्रोलिथ कहा जाता था।
- इस युग में मानव द्वारा पशुपालन के प्रारंभिक साक्ष्य राजस्थान में बागोर एंव मध्यप्रदेश के आदमगढ़ में मिले है।
- सर्वप्रथम कुते को पालतु बनाया गया था।
- शिकार की बढ़ती आवश्यकता की पूर्ति के लिये तीर का विकास हुआ।
- बढ़ती जनसंख्या के कारण सामूहिकता की भावना का विकास हुआ।
- टोली बनाकर शिकार करने के चित्र मध्यप्रदेश की भीमबेटका की गुफाओं में मिलते है।
- **मध्य प्रदेश का भीमबेटका मेसोलिथिक संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थल है।**

नव पाषाण काल (5000ई0पु0 से 2500ई0पू0)

- निवास गुफाएं , मिटटी सरकंडों व कच्ची ईटों से बने मकान, कश्मीर में खडडों में घर (बुर्जहोम व गुफकराल), कच्चे मकान
- उधोग आखेट, **कृषि कार्य**, पशुपालन एंव कच्चं घरों का निर्माण, औजारों पर पालिश का कार्य।
- औजारों पर पालिश का होना इस युग की प्रमुख विशेषता है।कुल्हाड़ी गदा आरियों का प्रयोग भी होता था।
- इस युग में मिटटी के बतर्न,चाक तथा पहिये का आविष्कार हुआ।
- पटना के पास चिरांद नामक स्थल पर हडडी के औजार भी पाये गये है।
- इलाहाबाद के निकट कोलहिडवा, महगडा एंव पंचोह से धान की खेती के प्रमाण मिले हैं
- भिती चित्रकला का विकास हुआ।

प्रस्तर धातुकाल (2500 ई0पू0 के आसपास)

- नव पाषाण काल के अतिंम चरण में घातु की खोज हुयी इसलिये इसे प्रस्तर पाषाण काल कहा जाता है।
- प्रस्तर धातु युग में दक्षिण भारत में महापाषाण संस्सकृति थी बड़े बड़े पत्थरों से घिरी समाधिया इस संस्कृति की मुख्य विशेषता थी
- ताबां मानव द्वारा खोजी गयी प्रथम घातु थी।

स्थल	काल
सोहन नदी की घाटी	पूर्व पाषाण काल
मालप्रभा व घाटप्रभा नदी घाटी(कर्नाटका)	पूर्व पाषाण काल
गिद्दलूर व करीमपुडी(आन्द्र प्रदेश)	पूर्व पाषाण काल
नेवासा (महाराष्ट्र)	पूर्व पाषाण काल
नरसिंहपुर (मध्य प्रदेश)	पूर्व पाषाण काल
डीडवाना (राजस्थान)	पूर्व पाषाण काल
सिंगरौली घाटी (मिर्जापुर)	पूर्व पाषाण काल
असम घाटी	मध्य पाषाण काल
बागोर (बनास घाटी)	मध्य पाषाण काल
कृष्णा घाटी	मध्य पाषाण काल
भीमवेटका	मध्य पाषाण काल
महदरा, सरायनाहर, चोपनीमण्डी व दमदमा	मध्य पाषाण काल
इलाहाबाद में लेहखटिया	मध्य पाषाण काल
बेलन घाटी (मिर्जापुर)	मध्य पाषाण काल
कोलहिडवा, महगडा एंव पंचोह	नव पाषाण काल
ब्लुचिस्तान में मेहरगढ़	नव पाषाण काल
चिरांद	नव पाषाण काल
बुर्जहोम एंव गुफकराल	नव पाषाण काल
आहड़ व गिलुन्द राजस्थान	प्रस्तर धातु काल
कैथा व एरण म0प्र0	प्रस्तर धातु काल

सिन्धु घाटी सभ्यता (2300 ई0पू0 से 1750 ई0पू0)

- विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है।
- प्रथम स्थल रावी नदी के तट पर हड़प्पा था इसलिये हड़प्पा सभ्यता भी कहते हैं।
- विस्तार 13 लाख वर्ग किमी था।(1299600)
- विस्तार उतर में जम्मु के निकट मांडा दक्षिण में गुजरात का भगतराव, पूर्व में मेरठ जिले के आलमगीरपूर से लेकर पश्चिम में ब्लुचिस्तान में स्थित सुतकांगेडोर तक है।
- सिन्धु घाटी सभ्यता की खोज के समय भारतीय पुरात्तव सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक सर जोन मार्शल थे।
- नगर नियोजन प्रमुख विशेषता
- 3-4 कमरों के मकान
- दरवाजे मुख्य सड़क पर नहीं
- पक्की ईटों की ढकी हुयी नालियां
- रसोईघर स्नानागार सीढीयां
- प्रत्येक मकान में कुआं
- सड़कें समकोण पर काटती
- सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था
- ईटों को जोड़नें में जिप्सम व बिटूमिनस का प्रयोग
- स्वच्छता व जलनिकासी की सुदर व्यवस्था समकालिन अन्य किसी व्यवस्था में नहीं
- बड़े बड़े मकान संयुक्त परिवार के घोतक
- मातृ सतात्मक परिवार मातृ देवी की मूर्तियां मिली है।शिवलिगं व पशुपति की मोहर मिली है।मूर्तिपूजा पायी जाती थी।
- पशुपति की मोहर में बाघ भैंसा गैंडा हाथी व हिरण
- एक मूर्ति के पेट से पौधा निकलता पाया गया जो मातृ देवी का प्रतिक
- पशु पूजा, सर्प पूजा व बलि का प्रचलन
- पशुओं में कूबड़ वाला बैल पवित्र एंव वृक्षों में पीपल चिन्हों में स्वास्तिक व चक्र पवित्र
- धुएं से काली मूर्तियां धुप व दीप के प्रयोग की घोतक
- मूर्तियां पक्की मिटटी (टेराकोटा) सेलखड़ी व धातु की
- चार वर्ग 1.पुरोहित, 2.योद्धा व राज्याधिकारी, 3.व्यापारी उत्पादक शिल्पकार ,4.श्रमिक
- विश्व में सर्वप्रथम कपास उत्पादन
- **कासें का प्रयोग**
- चित्रात्मक लिपि
- **सिन्धु लिपि को बांये से दांये पढ़ने और उसे तमिल भाषा में परिवर्तित करने वाले विद्वान रैवरैण्ड हैरस थे।**
- लाजवर्द , मणि,गोमेद व धातुऐं आयात
- सूति वस्त्र,बर्तन ,औजार व आभूषण निर्यात
- मापतौल 16 के अनुपात में ।
- बाट व फुटखण्ड थे।
- शाकाहारी व मांसाहारी
- मंदिर या सार्वजनिक पूजा के स्थल नहीं
- धर्म व्यक्तिगत आस्था का विषय **वर्तमान भारत आज भी धर्म के मामले में सिन्धु घाटी सभ्यता से प्रेरणा ले रहा है।**
- मोहनजोदड़ो का स्नानागार एकमात्र सार्वजनिक धार्मिक स्थल
- अन्न भंडार प्रणाली सिन्धु व सुमेरियन सभ्यता में समान है।

- बाढ़,वनों की कटाई, अकाल, अनुपजाउपन, रेगिस्तान का प्रसार, आर्यो का आक्रमण पतन के कारण माने जाते हैं।

स्थल	खोज वर्ष	खोज	नदी	विशेषता
हड़प्पा(पा0)	1921	दयाराम साहनी	रावी	बड़े अन्नागार सामुदायिक चक्की
मोहनजोदड़ो(पा0)	1922	राखलदास बनर्जी	सिन्धू	सार्वजनिक स्नानागार,सूती कपड़े का टूकड़ा
सूतकांगेडोर(पा0)	1927	टार्थर स्टाईन	दाश्क	पश्चिमी सीमा
चन्हुदड़ो(पा0)	1931	MG मजूमदार		अधबने मोती
रंगपूर	1931	वत्स	भादर	
कोटदीजी(पा0)	1935	घूरे		
कालीबंगा	1953	ए.घोष	घग्घर	अग्निकुडं या यज्ञवेदी,हल द्वारा खेत जोतने
लोथल	1957	राव	साबरमती भोगवा	अग्निकुडं या यज्ञवेदी, कृत्रिम बन्दरगाह
सुरकोटड़ा	1964	ज्गातपति जोशी		
बनावली	1973	रणधीर सिंह विष्ट		
धौलावीरा	1991	रणधीर सिंह विष्ट		
आलमगीरपुर			हिण्डन	पूर्वी सीमा
रोपड़			सतलज	
मांडा			चिनाब	उतरी सीमा
भगतराव				दक्षिणी सीमा

वैदिक काल (1500 ई0पू0 के आसपास)

- निर्माता आर्य जो बाहर से आये
- काबुल से उपरी गंगा घाटी का क्षेत्र ऋग्वैदिक काल में सप्त सैन्धव प्रदेश
- उपरी गंगा घाटी में चावल का उत्पादन 3000 ई0पू0 के आसपास प्रारंभ हो गया था।
- सप्त सैन्धव सात प्रमुख नदियों :- झेलम चिनाब रावी व्यास सतलज सिन्धु सरस्वती के क्षेत्र को
- सरस्वती विलुप्त
- ऋग्वेद में गंगा यमुना का उल्लेख एक दो बार ही सर्वाधिक उल्लेख सिन्धु नदी का हुआ है।
- **देबल सिन्धु नदी के किनारे बसा हुआ बन्दरगाह है।**
- सप्त सैन्धव से आगे विस्तार होने पर सदानीरा(गंडक) से विन्ध्याचल तक का क्षेत्र आर्यावर्त कहलाया

मूल स्थान	प्रतिपादक
मध्य देश	डा0 राजबलि पाण्डे
सप्तसिन्धु प्रदेश	ए.सी.दास व डा0 सम्पूर्णानंद
ब्रहमर्षि प्रदेश	डा0 गंगानाथ झा
कश्मीर	एल.डी.कल्ल
तिब्बत	स्वामी दयानंद सरस्वती
उतरी धुव्र	बाल ग्रगाधर तिलक
जर्मनी	पेंका
द0रूष	नेहरिंग व गार्डन चाईल्ड
हंगरी	गाइल
बाल्टिक क्षेत्र	मच
मध्य एशिया	मैक्समूलर
बैट्रिया	रोहड्स व शिलीगोलैण्ड
किर्गीज मैदान	बैण्ड स्टोन

पामीर	एडवर्ड मेयर व ओल्डन बर्ग

- ऋग्वेद में वर्णित नंदिया:-

वैदिक नाम	**वर्तमान नाम**	**क्षेत्र**
वितास्ता	झेलम	कश्मीर पंजाब
अस्किनी	चिनाब	हिमाचल, पंजाब
परूष्णी	रावी	हिमाचल, पंजाब
विपाशा	व्यास	हिमाचल, पंजाब
शतुद्री	सतलज	तिब्बत, हिमाचल, पंजाब
गोमती	गोमल	अफगानिस्तान
कुंभा	काबुल	अफगानिस्तान
सदानीरा	गडक	बिहार

- पांच प्रमुख कबीला या जन जिन्हें पंचजना कहते:- यदु, अनु, दृहयु, पुरू, तुर्वस
- अनिल भरत शिव विषाणिन पक्थ अन्य प्रमुख कबीले
- दशराज्ञ: युद्ध **भरत(त्रित्सु) जन के राजा सुदास** व दस अन्य जनों के बीच **विश्वामित्र के नेतृत्व में** परूष्णी नदी के तट पर हुआ जिसमें राजा सुदास(भरत जन) की जीत इससे भारतवर्ष नाम
- वेद 4 हैं।
- विश्व के प्राचीनतम ग्रन्थ
- ईश्वर द्वारा रचित होने से अपौरूषेय
- श्रुति और त्रयी भी कहते हैं
- वेदव्यास ने लिपिबद्व कर रचना
- **ऋग्वेद:-**
  1. विश्व की प्रथम पुस्तक
  2. रचनाकाल 1500 ई0पू0 से 1000 ई0पू0
  3. 10 मण्डल 1017 मन्त्र
  4. गायत्री मन्त्र भी
  5. दो ब्राहमण ग्रन्थ है ।. एतरेय ब्राहमण ।।. कौशितकी ब्राहमण
  6. **ऋग्वेद स्तुतियों का संग्रह है।**
  7. **ऋग्वेद का एक सम्पूर्ण मंडल सोम देवता को समर्पित है।**
- **सामवेद:-**
  1. उतर वैदिक कालीन
  2. संगीतबद्ध शैली विश्व की पहली संगीत पुस्तक
  3. 1810 मन्त्र
  4. दो ब्राहमण ।. पंचविश ।।. अद्भुत

- **यजुर्वेद:-**

1. यज्ञों से संबधित मन्त्र
2. दो शाखाएं है ।.कृष्ण यजुर्वेद ।।.शुक्ल यजुर्वेद
3. 2000 मन्त्र
4. दो ब्राहमण ।. शतपथ ब्राहमण ।।. तैतरीय ब्राहमण

- **अथर्ववेद:-**
  1. अन्य संस्कृतियों के विश्वासों का समावेश
  2. लौकिक विश्वास व आयुर्वेद चिकित्सा संबधि मन्त्र
  3. 731 मन्त्र
  4. एक ब्राहमण गोपथ ब्राहमण

5. <u>सर्वप्रथम परीक्षित का उल्लेख</u>

- **<u>ब्राहमण</u>** गद्यात्मक ग्रन्थ है जबकि वेद पदात्मक ग्रन्थ है ब्राहमणों में वेदों की व्याख्या, कथाओं व उदाहरणों सहित स्पष्टीकरण एंव प्रयोग विधान दिया है।
- **<u>आरण्यक</u>** वनों में रहने वाले मुनियों द्वारा रचित ग्रन्थ है वेदों की दार्शनिक बातों से संबधित इनमें यज्ञ व स्तुति की उपक्षा ज्ञान चिन्तन व तप को अधिक महत्व दिया गया है।
- **<u>उपनिषद या वेदान्त</u>**

1. वैदिक चिन्तन की चरम परिणिति है।
2. गुरू शिष्य के मध्य प्रश्नोतर शैली में
3. 108 हैं
4. ईश केन मुण्डक माण्डुक्य छान्दोग्य कठ प्रश्न तैतरीय आदि प्रमुख उपनिषद
5. <u>ऋग्वैदिक सभ्यता के ब्रहम तत्व की उपनिषद के ऋषियों ने आलेचना की है।</u>
6. सत्यमेव जयते मुण्डकोपनिषद से लिया गया है।

- वेदों के अध्ययन को सुगम बनाने के लिये एंव वैदिक कर्मकाण्डों के प्रतिपादन में सहायता करने के लिये वेदांग की रचना की गयी

<u>वेदांग</u>	**<u>विषय वस्तु</u>**
शिक्षा	उच्चारण सम्बन्धी
कल्प	यज्ञ व धार्मिक क्रियाओं संबधी
व्याकरण	भाषा पद व शब्द रचना
निरूक्त	व्याख्या संबधि
छन्द	छन्द रचना
ज्योतिष	भविष्य,नक्षत्र व खगोल विधा

- कल्प वेदांग के एक भाग सूत्र ग्रन्थ है।

1. <u>श्रोत सूत्रः-</u> यज्ञों के प्रकार व विधि विधान
2. <u>शुल्व सूत्रः-</u> यज्ञ वेदी निमार्ण या ज्यामिति
3. <u>धर्म सूत्रः-</u> नियम व विधि
4. <u>गृह सूत्रः-</u> गृहस्थ नियम व संस्कार

- वैदिक दर्शन पर आधारित षडदर्शन छह हैः-

<u>दर्शन</u>	**<u>प्रतिपादक</u>**
सांख्य	महर्षि कपिल
योग	महर्षि पतंजलि
न्याय	महर्षि गौतम
वैशेषिक	महर्षि कणादि
पूर्व मीमांसा	महर्षि जैमनी
उतर मीमांसा(वेदान्त)	महर्षि ब्रहदारण्य

<u>ऋग्वैदिक काल (1500 से 1000 ई0पू0)</u>

- पितृसतातमक परिवार
- परिवार समाज व राजनीति की ईकाई
- अनार्यों को हेय दृष्टि से देखते
- ऋग्वेद के दशम मण्डलके पुरूष सूक्त से वर्ण व्यवस्था का उल्लेख
- प्रजापति के मुख से ब्राहमण भुजाओं से क्षत्रिय जंघाओं से वैश्य एवं चरणों से शुद्र उत्पन्न हुए हैं।
- इस प्रकार सभी वर्ण एक ही ईश्वर की संतान
- महिलाओं का स्थान सम्मानजनक
- सती प्रथा बाल विवाह पर्दा प्रथा नहीं
- महिलाओं को धार्मिक राजनैतिक व शैक्षिक क्षेत्र में समान अवसर
- विश्ववारा लोपामुद्रा घोषा अपाला आदि विदुषी महिलांए

- महिलाएं सभा व समिति में स्थान पाती थी
- **धार्मिक कार्यों में महिलाओं व पूरूषों का एक साथ रहना जरूरी**
- सुरापान व मांसाहार होता था।
- लोगों का मुख्य भोजन जौ गेंहूं दूध व उससे बने पदार्थ फल व शाक
- ग्रामीण अर्थव्यवस्था
- पशुपालन मुख्य व्यवसाय
- कृषि गौण व्यवसाय
- हल उर्वरक व सिंचाई का ज्ञान
- पशुओं में गाय का सर्वाधिक महत्व अघन्या अर्थात वध न करने योग्य कहा है।
- व्यापार वस्तु विनिमय से
- ऋगवेद में पणि नामक व्यापारियों का वर्ग मिलता है।
- ऋग्वेद में बढ़ई,धातुकर्म, स्वर्णकार, चर्मकार जुलाहे कुम्भकार का उल्लेख
- **राजनितिक व्यवस्था**

विवरण	**ईकाई**	**इकाई का प्रमुख**
राजनीतिक ईकाई	परिवार या कुल	कुलप
परिवारों का समूह	ग्राम	ग्रामणी
ग्रामों का समूह	विश	विशपति
दो या अधिक विश	जन या कबीला	गोप या राजन

- ऋग्वेद में राजा के निर्वाचन का भी उल्लेख है।
- राजा को परामर्श देने एंव उसकी निरकुंशता पर नियंत्रण के लिये सभा और समिति
- **पुरोहित राजा के पश्चात सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी**
- समिति सामान्य जन परिषद
- सभा वरिष्ट जनों एंव ब्राहमणों की परिषद

उतर वैदिक काल (1000 से 500 ई0पू0)

- महिलाओं की स्थिति में गिरावट सभा और समिति में महिलाओं के भाग लेने का उल्लेख नहीं
- गार्गी व मैत्रयी जैसी विदूषी महिलाओं के भी उदाहरण
- आश्रम व्यवस्था में मनुष्य जीवन व्यवस्थित
- **व्यावसायिक निपुणता जाति प्रथा का आधार**
- कृषि मुख्य व्यवसाय
- बैलों से खेत जोते जाते
- 24 बैलों से खीचें जाने वाले हल का उल्लेख
- निष्क नामक स्वर्णमुद्रा का प्रचलन
- उतर वैदिक काल में लोहे की खोज
- लोहे के प्रयोग के प्रथम साक्ष्य 1025 ई0पू0 उतर प्रदेश के एटा जिले के अतरंजीखेड़ा में
- लोहे को कृष्ण अयस कहा है।
- लोहे के आविष्कार से औजार बनाने हथ्यिार बनानें वनों को साफ करके कृषि व निवास के लिये अधिक भूमि प्राप्त करने जैसे क्रान्तिकारी परिवर्तन आये इससे द्वितीय नगरीकरण की शुरूआत
- बलि व भाग नामक कर
- **उतरवैदिक काल में राज्य के गठन का आधार कुल न होकर भूमि विस्तार हो गया।**
- **ब्रहमा नामक पुरोहित यज्ञ के सम्पादन का निरीक्षण करता था।**
- राज्यधिकारियों में मुख्य रत्निन शेष सूत अक्षवाप भागदुध संग्रहिता आदि
- अर्थववेद में सभा और समिति को प्रजापिता की पुत्रियां कहा
- **स्मृतियों में चार प्रकार के विवाह का वर्णन है इनमें वर्णित आर्स विवाह में वर कन्या के पिता को एक गो मिथुन देता था**

- **याज्ञवल्कय स्मृति की टीका अपरार्क नामक शिलाहार राजा ने की।**
- **उतरवैदिक साहित्य में वर्णित राज्य:-**

राजा	**राज्य**
अजातशत्रु	काशि
अश्वपति	केकेय
जनक	विदेह

वैदिक काल के प्रमुख देवता

1. **स्वर्ग के देवता:-** वरूण द्यौ सूर्य विष्णु अश्विन पूषण
2. **अतंरिक्ष के देवता:-**इन्द्र, मरूत पवन रूद्र पर्जन्य
3. **पृथ्वी के देवता:-** अग्नि वृहस्पति सोम

- ऋग्वेद में वरूण को सर्वोच्च देवता बताया है जो प्रकृति के नियमों के अधिष्ठाता माने जाते
- ऋग्वैदिक काल में सवार्धिक लोकप्रिय देवता इन्द्र थे इनके बारे में ऋग्वेद में सवार्धिक ऋचाएं हैं
- अग्नि मनुष्य व देवताओं के बीच मध्यस्थ
- **एशिया माईनर से प्राप्त बोगजकोई अभिलेख में इन्द्र, नासत्य, मित्र, वरूण नामक वैदिक देवताओं का आव्हान किया गया है।**
- उतरवैदिक काल मे यज्ञ में कर्मकांड की प्रधानता जटिलता व बलि का प्रचलन
- प्रमुख वैदिक यज्ञ:-

यज्ञ	**उददेश्य**
राजसूय	राज्याभिषेक के समय
अश्वमेघ	साम्राज्य विस्तार व चक्रवर्ति सम्राट बनने के
वाजपेय	राजा की शक्ति व महत्व में वृद्धि
सोमयज्ञ	देवताओं की प्रसन्ता व समृद्धि प्राप्ति
अग्निष्टोम(सोम यज्ञ का प्रकार)	शक्ति व समृद्धि के लिये
ब्रात्यस्तोाम	अनार्यो को आर्य धर्म में शामिल करने के लिए

छठी शताब्दी ई0पू0 में प्रमुख सम्प्रदाय एंव प्रतिपादक

सम्प्रदाय	**प्रतिपादक**
आजीवक	मक्खलि पुत गोशाल
उच्छेदवाद	अजित केश कम्बलिन
सन्देहवाद	संजय वेलट्ठपुत
नित्यवाद	पकुधकच्चायन
अक्रियावाद	पूरन कस्सप
लोकायत या भौतिकवाद	चावार्क

जैन घर्म

- वैदिक धर्म के समान प्राचीन माना जाता है।
- **संस्थापक प्रथम तीर्थकर ऋषभदेव**
- तेइसवें तीर्थकंर पार्श्वनाथ जिनके समय तक इस धर्म को निग्रर्थ धर्म तथा शिक्षाओं को चर्तुयाम कहा जाता था।
- 24 वें तीर्थकंर महावीर स्वामी के काल से जैन धर्म नाम अत: **प्रतिपादक महावीर स्वामी**
- **महावीर स्वामी जन्म 540 ई0पू0 कुण्डग्राम (वैशाली के निकट)**
- पिता सिद्वार्थ **वज्जि संघ के घटक ज्ञातृक वंश के क्षत्रियों के प्रमुख**
- माता त्रिशला लिक्ष्छवी वंश के प्रमुख चेटक की बहन
- बचपन का नाम वर्धमान

- विवाह यशोदा नाम की राजकुमारी से
- पुत्री प्रियदर्शना जिसका पति जमाल महावीर स्वामी का शिष्य बन गया
- गृहत्याग 29 वर्ष की आयु में
- शरीर को अनेक कष्ट देकर निवस्त्र रहकर तपस्या की
- केव्लय (सर्वश्रेष्ट ज्ञान) 42 वर्ष की आयु में ऋजुपालिका नदी के तट पर जम्भि ग्राम में
- ज्ञान प्राप्ति में 13 वर्ष का समय
- **संसार से मुक्ति पाने के ज्ञान को जैन धर्म में कैव्लय कहा गया है।**
- केव्लय प्राप्ति के कारण **केवलिन**, इन्द्रियों तथा शरीर के कष्टों पर विजय प्राप्ति के कारण **जिन** , श्रेष्ट कार्य करने के कारण **अहर्त**(योग्य) कठोर तपस्या तथा साधना में अटल रहने के पराक्रम के कारण **महावीर** नाम पड़ा।
- महावीर स्वामी को जिन कहने के कारण इनके सम्प्रदाय का नाम जैन
- वर्ष में चार माह तक एक स्थान पर रहते शेष समय में भ्रमण
- जैन धर्म के प्रचार में चेटक व अजातशत्रु राजा ने सहयोग
- मृत्यू 468 ई.पू. में राजगृह के निकट पावापुरी नामक स्थान पर
- आयु 72 वर्ष
- सत्स, अहिंसा, अस्तेय(चोरी न करना), अपरिग्रह व ब्रहमचार्य पांच महाव्रत
- **प्रथम चार सिद्वान्त पार्श्वनाथ के समय से 24 वे तीर्थकंर महावीर स्वामी ने ब्रहमचार्य नया जोड़ा।**
- सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान व सम्यक चरित्र त्रिरत्न है।
- जैन धर्म में अहिंसा तप व शारीरिक कष्ट सहने पर बल
- जैन धर्म वेदों की अपौरूषेयता को स्वीकार नहीं
- कर्मवाद आत्मा की अमरता व **पुनर्जन्म को स्वीकार**
- स्यादवाद या अनेकान्तवाद का सिद्धान्त जैन धर्म का विशिष्ट सिद्धान्त है जिसके अनुसार प्रत्येक वस्तु के अनेक पहलु होते हैं तथा विभिन्न दृष्टिकोण से देखने पर सभी सत्य लगते हैं।
- जैन धर्म चन्द्रगुप्त मौर्य के शासन काल में श्वेताम्बर एंव दिगम्बर दो सम्प्रदायों में बंट गया।
- चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में पड़े अकाल के कारण जैन भिक्षु भद्रबाहु के नेतृत्व में दक्षिण भारत में श्रवणबेलगोला गये जैनों का वर्ग दिगम्बर(नग्न रहने वाले) कहलाया।
- **श्वेताम्बर व दिगम्बर में अन्तर का मुख्य कारण दिग्म्बरों का अनुशाासित व कठोर जीवन है।**
- दक्षिण भारत में जैन धर्म के प्रचार का श्रेय भद्रबाहु को दिया जाता हैं।
- **निषिधि जैनों की पारम्परिक मृत्यु क्रियाओं को कहते है।**
- **जैन साहित्य प्राकृत भाषा में है।**
- **माउंट आबू में देलवाड़ा के मदिंर जैन स्थाप्तय कला के उदाहरण है।**
-

क्र0सं0	जैन संगिति	काल	स्थान	अध्यक्षता	निर्णय
1.	**प्रथम जैन** संगिति	300 ई0पू0	**पाटलिपुत्र**	स्थूलभद्र	धर्म ग्रन्थों का 10 पूर्व व 12 अगों के रूप में संकलन किया गया।
2	द्वितीय जैन संगिति	512 ई0	वलभी (गुजरात)	देवर्धि क्षमाश्रवण	जैन धर्म के सिद्वान्तों व नियमों का पुन: संकलन किया गया।

बोद्ध धर्म

- गौतम बुद्ध का जन्म 563 ई0पू0 में कपिलवस्तु के निकट लुम्बिनि ग्राम में हुआ था।
- बचपन का नाम सिद्धार्थ
- पिता का नाम शुद्धोधन जो वज्जि संघ में शाक्य वंश के प्रमुख
- माता महामाया कौशल की राजकुमारी, जन्म के समय माता की मृत्यू

- पालन पोषण मौसी प्रजापति गौतमि ने किया
- विवाह यशोधरा नामक राजकुमारी
- पुत्र का नाम राहुल
- अपने सारथी चाण के साथ नगर भ्रमण में एक जर्जर वृद्व, एक दुखी रूग्ण, एक शव देखकर विरक्ति
- 29 वर्ष की आयु में रात्रि में गृहत्याग इस घटना को महाभिनिष्क्रमण
- गया में एक स्थान पर पीपल के वृक्ष के नीचे 49 दिन तक लगातार तप करने से बोदिसत्व की प्राप्ति
- **वाराणासी के निकट पहला उपदेश सारनाथ में पांच पुराने साथियों को दिया जिसे धर्मचक्रप्रवर्तन कहते है।**
- बौद्ध संघ में शमिल होने वाली प्रथम महिला बुद्ध की विमाता गौतमी थी
- आनन्द बुद्ध के प्रिय शिष्य थे।
- वैशाली की नगर वधु आम्रपाली भी बुद्ध की शिष्या
- पुरे वर्ष में वर्षा ऋतु के अलावा घुम घुम कर अपने मत का प्रचार
- 80 वर्ष की आयु में मल्ल राज्य के पावा में स्वास्थ्य बिगड़ा व कुशीनगर में मृत्यु 483 ई0पू0 में हो गयी इस घटना को महापरिनिर्वाण
- स्तूप महापरिनिर्वाण का प्रतिक है।
- तपस्या में कठोर साधना व काया क्लेश को त्याग कर मध्यम मार्ग अपनाया
- **मध्यम मार्ग के सिद्वान्त के लिये विश्व बौद्व धर्म का ऋणी है।**
- **प्रतीत्यसमुतपाद बौद्ध धर्म का प्रमुख सिद्धान्त है जिसके अनुसार प्रत्येक घटना का कोई कारण अवश्य होता है तथा संसार की समस्त व्यवस्थाएं कारण से उत्पन्न हुयी है और वे उस कारण पर निर्भर है।**
- बोद्ध धर्म के चार आर्य सत्य निम्न है:-
    - संसार दु:खपूर्ण है।(दु:ख)
    - प्रत्येक दु:ख का कोई कारण अवश्य है जैसे तृष्णा, इच्छा, मोह आदि अज्ञान सभी दु:खों का मूल कारण है।(दु:ख समुदाय)
    - दु:ख के कारण को समाप्त करके दु:ख का अन्त सम्भव है।(दु:ख निरोध)
    - दु:ख तथा अज्ञान के निवारण का उपाय अष्टागिंक मार्ग है।(दु:ख निरोध गामिनी प्रतिपदा)
- अष्टांगिक मार्ग में सम्यक अर्थात समुचित तरिके से जीवन यापन के आठ तरिके हैं:-
    1. सम्यक दष्टि
    2. सम्यक संकल्प
    3. सम्यक वाक्
    4. सम्यक कर्मान्त
    5. सम्यक आजीव
    6. सम्यक व्यायाम
    7. सम्यक स्मृति
    8. सम्यक समाधि
- दस शील जिनका पालन करने से दु:ख नहीं होगा:-
    1. सत्य
    2. अहिंसा
    3. अस्तेय
    4. अपरिग्रह
    5. ब्रहमचार्य
    6. असमय भोजन का त्याग
    7. सुखप्रद शैया का त्याग
    8. नृत्य संगीत मादक वस्तुओं का त्याग

9. सुगन्धित पदार्थो का त्याग
10. कुविचारों का त्याग

- **बोद्ध धर्म पुर्नजन्म व क्षणवाद के सिद्धान्त को स्वीकार करता है**।
- आत्मा की अमरता, वेदों की अपोरूषेयता , वर्ण व्यवथा को अस्वीकार
- वैदिक कर्मकाण्ड,पशुबलि व छुआछुत का विरोध
- **अतिशा एक बौद्ध भिक्षु थे।**
- सरल आम जनता के प्रति उदार व नैतिक जीवन का समर्थक होने से ज्यादा अपनाया
- **बौद्ध साहित्य त्रिपिटक कहलाता है।**
- बोद्ध धर्म की संगीतियां

संगीति	स्थान	समय	अध्यक्ष	शासक
प्रथम	राजगृह	483ई0पू0	महाकश्यप	अजातशत्रु
द्वितीय	वैशाली	383 ई0पू0	आचार्य सर्वकामी	कालाशोक
तृतीय	पाटलिपुत्र	250 ई0पू0	मोग्लिपुत तिस्य	अशोक
चतुर्थ	कुण्डलवन	प्रथम शताब्दी	वसुमित्र	कनिष्क

- द्वितीय बौद्ध संगिति के पश्चात दो सम्प्रदायों में बंट गया
  1. **थेरवादी या स्थविरवादी:-** परम्परागत नियमों के समर्थक
  2. **महासांधिक या सर्वास्तिवादी:-** विनय के नियमों में परिवर्तन के समर्थक
- चतुर्थ संगीति के पश्चात दो भागों में बंट गया
  1. **हीनयान:-** रूढीवादी व बुद्ध को महामानव मानने वाले
  2. **महायान:-** भक्तिवादी बुद्ध को देवता मानने वाले बोधिसत्वों व मूर्तिपूजा में विश्वास करने वाले

- छठी सातवीं शताब्दी में :-
  1. वज्रयान:- तन्त्र मन्त्र में विश्वास, तिब्बत, चीन, भुटान व बंगाल में प्रचलित
  2. वैभाषिक, सौत्रान्तिक, माध्यमिक(शून्यवाद), योगाचार(विज्ञानवाद)

भागवत धर्म

- इसके प्रमुख देवता वासुदेव कृष्ण तथा विष्णु है।
- पांचरात्र धर्म भी कहलाता
- देवकी पुत्र कृष्ण का प्रथम उल्लेख छान्दोगय उपनिषद में
- पाणिनी की अष्टाध्यायी में भी वासुदेव कृष्ण का उल्लेख
- कृष्ण का जन्म शूरसेन जनपद के वृष्णि वंश में
- संकर्षण या बलराम भाई
- प्रधुम्न पुत्र
- अनिरूद्व पौत्र
- बलराम, प्रधुम्न, अनिरूद्व व महाभूत को चतुर्व्यूह के नाम से जानते हैं।
- भगवद्गीता व भागवत पुराण प्रमुख ग्रन्थ
- **पुराण ऐतिहासिक वंशावलियों से संबधित ग्रन्थ है।**
- अनुयायी भागवत कहलाये दक्षिण भारत में अलवार कहा
- श्री विष्णु के 24 अवतार हुए 10 प्रमुख हैं।
- 1.मत्सय 2. कूर्म (कछुआ) 3. वराह (सूअर) 4. नरसिंह 5. वामन 6. परशुराम 7. राम 8. कृष्ण 9. बुद्ध 10. कल्कि (भविष्य में)
- **विष्णु पुराण में कहा गया है कि वह देश जो समुद्र के उतर व हिमाच्छिद पवर्तो के दक्षिण में है भारत कहलाता है यहां भरत के वंशज रहते है।**

पाशुपत या शैव धर्म

- सबसे प्राचीन संस्थापक लकुलीश
- उत्पति वैदिक देवता रूद्र से
- दक्षिण भारत में इस धर्म के अनुयायी नयनार भी कहे
- कापालिक श्मशान भस्म रूद्राक्ष व खप्पर धारण करने वाले
- कालामुख मुख को काला रगंने वाला शैव सम्प्रदाय है।
- वीरशैव या लिगांयत दक्षिण भारत में वर्ण व्यवस्था का विरोध करने वाला शैव सम्प्रदाय
- कश्मीरी शैव उदारवादी व सात्विक है।

महाजनपद

- 16 प्रमुख महाजनपद थे।**जिनकी सूची अंगतरी निकाय में है।**
- जनपदों में राजतंत्रात्मक शासन था परन्तु वज्जि संघ में गणतन्त्रात्मक शासन
- मगध ने अपने श्रेष्ठ शासकों व भौतिक संसाधनों के कारण उन्नति की
- जनपद काल में भारत पर पहला विदेशी आक्रमण 516 ई0पू0 में ईरान (फारस) के शासक डेरियस या दायरवहु ने किया था।

महाजनपद	**राजधानी**
अंग	चम्पा
मगध	राजगृह
काशी	वाराणासी
कोशल	श्रावस्ती/अयोध्या
वज्जि	वैशाली
मल्ल	कुशीनगर
वत्स	कौशम्बी
पांचाल	अहिछत्र/काम्पिलय
कुरू	इन्द्रप्रस्थ
कम्बोज	राजपुरा
गान्धार	तक्षशिला
मत्सय	विराटनगर
शूरसेन	मथुरा
चेदि	शक्तिमति
अवन्ति	उज्जेन/महिष्मति
अश्मक	पाटन/पोटलि

बिम्बिसार (544 से 492 ई0पू0)

- **मगध का उत्कर्ष हर्यक वंश के राजा बिम्बिसार के समय प्रारम्भ**

अजातशत्रु (492 से 460 ई0पू0)

- बिम्बिसार का पुत्र
- गौतम बुद्ध का समकालीन
- वज्जि संघ पर आक्रमण के समय पाटलिपुत्र नगर की स्थापना

उदयन या उदयभद्र (460 से 444 ई0पू0)

- अजातशत्रु का पुत्र
- मगध की राजधानी राजगृह से बदलकर पाटलिपुत्र
- हयर्क वंश का अतिंम शासक

शिशुनाग(412 से 394 ई0पू0)

- शिशुनाग वंश की स्थापना
- **शिशुपालगढ़ उड़ीसा में स्थित है।**

कालाशोक (394 से 366 ई0पू0)

महापदमनंद (344 ई0पू0)

- नंद वंश की स्थापना

धननंद

- अंहकारी व नंद वंश का अतिंम शासक
- पाटलिपुत्र के प्रसिद्व ब्राहमण चाण्क्य का अपमान

सिकन्दर का आक्रमण

- सिकन्दर मकदूनिया का शासक
- 326 ई0पू0 के आासपास आक्रमण
- तक्षशिला के शासक आम्भि ने सिकन्दर की अधीनता स्वीकार करली
- झेलम नदी के तट पर पुरू अथवा पोरस के साथ भयंकर युद्ध
- सिकन्दर ने जीत कर भी पुरू के राज्य पर अधिकार नहीं किया
- इस युद्व के बाद सेना ने आगे बढ़ने से ईकार कर दिया उस समय मगध पर नंद वंश का शासन
- सिकन्दर स्थल मार्ग से आया था समुद्री मार्ग से वापस लौटा
- वापसी में मिस्त्र में अलेक्जेन्ड्रिया के पास मृत्यु
- सिकन्दर की मृत्यु के पश्चात उसके विजित प्रदेशों को उसके सेनानायकों के शासन से चन्द्रगुप्त मौर्य ने मुक्त करवाया
- सिकन्दर के साथ एरियन नामक युनानी इतिहासकार भी आया था।**एरियन के अनुसार भारतीय समाज में दास प्रथा का नितान्त अभाव था।**
- **सिकन्दर के आक्रमण से भारत का आर्थिक जीवन सर्वाधिक प्रभावित हुआ।**

चन्द्रगुप्त मौर्य 322 से 298 ई0पू0

- चाण्क्य ने चन्द्रगुप्त मौर्य को तक्षशिला में शिक्षा दी
- इसने सेना एकत्र कर पश्चिमोतर भारत को युनानियों से मुक्त करवाया
- 305 ई0पू0 में युनानी शासक सेल्युक्स को पराजित कर अफगानिस्तान का क्षेत्र जीता सेल्युकस निकोतर सीरीया और बेबीलोन का शासक था ।
- 322 ई0पू0 में धननंद को हराकार मगध का साम्राज्य
- राज्य वर्तमान उतर प्रदेश बंगाल बिहार मैसूर दक्षिण भारत में
- युनानी लेखकों ने सेंड्रोकोटस कहा
- **युनानी राजदुत मेगस्थनीज चन्द्रगुपत के दरबार में आया उसकी पुस्तक ईंडिका में पाटलिपुत्र प्रशासन का वर्णन है।मेगस्थनीज ने भारतिय लोगों के उच्च नैतिक सतर की प्रशंसा की है तथा सादा जीवन व मितव्यवता को उनके सुखी जीवन का कारण बताया है।मेग्स्थनिज ने भारतिय समाज को सात वर्गो में विभाजित किया है।**
- कौटिल्य की पुस्तक अर्थशास्त्र जिसमें पुस्तक के लेखक को **कौटिल्य के अलावा विष्णुगुप्त नाम से भी संबोधित किया है।यह शासन के सिद्वान्तों की पुस्तक है।**

बिन्दुसार (298-273 ई0पू0)

- तक्षशिला व स्वस(नेपाल की तराई) में विद्रोह
- जिसे युवराज अशोक ने दबाया
- यूनानी राजदुत डायमेकस इसके दरबार में आया
- युनानी लेखकों ने अमित्रघात या अमित्रोचेटस कहा है।

अशोक (273 से 232 ई0पू0)

- बिन्दुसार का पुत्र
- प्रारभिंक वर्षो में साम्राज्य विस्तार
- कलिंग पर शासन के नौवें वर्ष में आक्रमण
- कलिंग विजय में भीषण नर संहार से बौद्व धर्म की और आकर्षण

- उपगुप्त नामक बौद्व भिक्षु से शिक्षा
- युद्व विजय के स्थान पर धम्म विजय का मार्ग
- बोधिवृक्ष व लुम्बनि की धम्म यात्रा की
- श्रीलंका में धम्म प्रचार के लिये पुत्र महेन्द्र व पुत्री संघमित्रा को भेजा
- साम्राज्य सुदुर दक्षिण के छोटे राज्यों को छोड़कर सम्पुर्ण भारत तथ अफगानिस्तान में फेला था
- **अशोक का समकालिन मिश्र का राजा टोलेमी ।। फिलाडेल्फस था।**
- शिलालेख स्तम्भ व स्तूप बनवाये
- **अफगानिस्तान में प्राप्त अशोक के सभी अभिलेख आरमाईक एंव ग्रीक भाषा में है।**
- लोककल्याण के अनेक कार्य किये
- **देवनामप्रिय की उपाधि धारण की अशोक के बाद तिस्सा ने देवनामप्रिय उपाधि का प्रयोग किया**
- अशोक के बाद मौर्य साम्राज्य का पातन प्रारम्भ

ब्रहदथ

- अतिंम मौर्य शासक जिसको उसके सेनापति पुष्य मित्र शुंग ने मारकर मगध पर शासन प्रारम्भ किया

मौर्यकाल में सामाजिक व्यवस्था

- मेगस्थनीज ने कार्य के आधार पर सात जातियों का होना
- चार वर्ण में बंटा समाज
- समाज में गणिकाओं को सम्मान व मान्यता सम्राट की महिला अंगरक्षकों का उल्लेख
- दास प्रथा थी मेगस्थनीज ने दास प्रथा का अभाव लिखा है क्यों कि युनान की अपेक्षा दासों से उदार व्यवहार
- **ताले नहीं लगाना शान्ति और अनुशासन व्यवस्था का उल्लेखनीय तत्व था।**

मौर्यकाल में आर्थिक व्यवस्था

- कृषि मुख्य व्यवसाय भू राजस्व आय का मुख्य स्त्रोत
- भू राजस्व उपज का 1/6
- राजकीय भूमि पर सीताध्यक्ष की देखरेख में कृषि
- कृषि पशुपालन व वाणिज्य को अर्थशास्त्र में यम्मिलित रूप से वार्ता कहा है।
- **अर्थशास्त्र में जनजातियों द्वारा जोती जाने वाली भूमियों को सीता कहा है।**
- **व्यापार में वस्तु विनिमय के साथ आहत मुद्राओं(पंचमार्क सिक्कों) का प्रयोग होता था** भारत में आहत या पंचमार्क सिक्के मुद्रा की प्रारभिंक अवस्था **डी.डी. कौसम्बी ने पंचमार्क सिक्कों की विस्तृत व्याख्या की है।**

मौर्यकाल में धार्मिक व्यवस्था

- चन्द्रगुप्त मौर्य प्रारम्भं में ब्राहम्ण धर्म को मानता परन्तु अन्त में जैन हो गया
- बिन्दुसार आजीवक सम्प्रदाय का अनुयायी
- अशोक ने बौद्ध धर्म
- मेगस्थनीज ने शूरसेन(मथुरा क्षेत्र) में भागवत धर्म के विकास का उल्लेख

मौर्यकाल में कला

- भारत का राजचिन्ह अशोक के सारनाथ स्तम्भ से लिया गया
- सांची का स्तूप अशोक ने बनवाया
- मौर्यकाल के स्तम्भों पर अखमनी(ईरानी कला) का प्रभाव
- **चक्रपाणी चिकित्साशास्त्र में निपुण थे।**

मौर्यकाल में प्रशासनिक व्यवस्था

- अधिकारी वर्ग को अमात्य कहा जाता था।
- गृह व वित संबधि कार्य समाहर्ता
- कोषाधिकारी सन्धिाता
- केन्द्रीय प्रशासन 18 तीर्थो(विभागों) में बंटा था।

- प्रत्येक विभाग का नियंत्रक अधिकारी अध्यक्ष
- राजकीय कृषि भूमि विभाग का अध्यक्ष सीताध्यक्ष
- विक्रय विभाग का अध्यक्ष पण्याध्यक्ष
- टकसाल विभाग का अध्यक्ष लक्ष्णाध्यक्ष
- खानों के विभाग का अध्यक्ष आकराध्यक्ष
- वन सम्पदा विभाग का अध्यक्ष कुपयाध्यक्ष
- गुप्तचर दो प्रकार के थे एक स्थान पर रहने वाले गुप्तचर संस्था व भ्रमणकारी गुप्तचर संचार कहलाते थे।
- धर्मस्थीय दीवानी न्यायालय थे जिनके न्यायाधीश व्यावहारिक कहलाते थे।
- कंटकशोधन फौजदारी न्यायालय थे इनके न्यायाधीश प्रदेष्टा कहलाते थे।
- मौर्य साम्राजय पांच प्रान्तों में बंटा था
- प्रान्तीय शासक कुमार कहलाता था
- प्रान्त जिलों में बंटें थे जिन्हे विषय कहते थे जिलाधिकारी विषयापति या एग्रोनोमी कहलाते थे।
- ग्राम प्रमुख ग्रामणी नगर प्रमुख नगरक
- मेगस्थनीज ने 30 सदस्य वाली नगर परिषद या पौरसभा का उल्लेख किया है **जिसका अधिकारी एस्टोनोमी** कहलाता था ये 6 समितियों में बंटी थी
- नगर परिषद के कार्य उधोग शिल्प, विदेशी नागरिक, जन्म मृत्यु पंजीकरण, व्यापार वाणिज्य, बिक्री कर, बाजार नियंत्रण थे।
- रज्जुक, युक्तक, स्थानिक, गोप आदि स्थानीय अधिकारी थे।
- **रूद्रादमन के गिरनार अभिलेख से ज्ञात होता है कि मौर्यो ने जल संसाधन पर पर्याप्त ध्यान दिया था।**

प्रान्त	**राजधानी**
उतरापथ	तक्षशिला
प्राची	पाटलीपुत्र
अवन्ति राष्ट्र	उज्जयनि
दक्षिणापथ	स्वर्णगिरी
कलिंग	तोसली

शुगं वंश

- 187 ई0पू0 में **अतिंम मौर्य शासक बहद्रथ को मारकर उसका सेनापति पुष्यमित्र शुगं** पाटलिपुत्र का राजा बना
- शुंग ब्राहमण वंश की स्थापना
- ब्राहमण धर्म कला व संस्कृति के उत्थान का काल
- यवन आक्रमणकारी मिनांडर के आक्रमण को पुष्यमित्र ने विफल किया
- पुष्यमित्र ने दो अश्वमेघ यज्ञ करवाये
- इसके राजपुरोहित पंतजलि थे।
- कई पुराणों व स्मृति ग्रन्थों की रचना
- पुष्यमित्र ने भरहुत स्तंभ का निमार्ण करवाया
- अग्निमित्र ने भरहुत व सांची के स्तूपों के अलंकृत द्वार व रेलिंग का निमार्ण करवाया
- शुग वंश का अतिंम शासक देवभूति था।

कण्व वंश

- अतिंम शुंग शासक देवभूति की हत्या उसके सेनापति वासुदेव ने 75 ई.पू. में करके पाटलिपुत्र में कण्व वंश स्थापित किया
- कण्व वंश में 4 शासक हुए
- अतिंम शासक सुशर्मा की हत्या उसके सामन्त सिमुक या सिन्धुक ने कर दी जिससे सातवाहन साम्राज्य का प्रारंभ

सातवाहन साम्राज्य

- ब्राहमण वंश था।
- आन्ध्रभृत्य भी कहा जाता है।
- संस्थापक सिमुक या सिन्धुक
- सातवाहनों की राजधानी वर्तमान महाराष्ट्र के प्रतिष्ठान में थी
- प्रथम प्रसिद्ध शासक शातकर्णी प्रथम था।
- सर्वश्रेष्ठ व सुप्रसिद्व शासक गौतमी पुत्र शातकर्णी था जिसने शाक ,पल्हव व यवनों को पराजित किया
- वशिष्ठी पुत्र पुलुमावी अन्य प्रसिद्ध शासक
- अतिंम शक्ति शाली शासक यज्ञ श्री शातकर्णी था। बौद्व दार्शनिक नागार्जुन यज्ञ श्री शातकर्णी का मित्र था।
- शैव व वैष्णव धर्मो के अनुयायी यज्ञ अनुष्ठान करते थे
- अमरावती में स्तूप का निमार्ण कराया
- चैत्य व विहार बनवाए
- सातवाहनों ने सीसे के सिक्के ढलवाए
- भूमिदान की शुरूआत एक सातवाहन अभिलेख पहली शताब्दी में भूमिदान का सर्वप्रथम उल्लेख
- **सातवाहन साहित्य प्राकृत भाषा में था।**

- सातवाहन साहित्य:-

ग्रन्थ	लेखक
गााथा सप्तशती	सातवाहन शासक हाल
बृहत्कथा	गुणाढय
कातन्त्र	शर्ववर्मन

वाकाटक वंश

- संस्थापक विन्ध्य शक्ति
- **प्रवरसेन प्रथम ने चार अश्वमेघ यज्ञ करवाए**

चेदिवंश

- कंलिग के चेदिवंश का संस्थापक महामेघवाहन था।
- इस वंश का तीसरा शासक खारवेल था जिसका हाथीगुम्फा अभिलेख प्रसिद्ध है।
- खारवेल जैन धर्म का अनुयायी था उसने हाथी गुफा जैन सन्तों को दान दी थी
- खारवेल के शासन में कलिंग शक्तिशाली व समृद्व राज्य बन गया

शक

- मध्य एशिया की सीथीयन जाति को वंहा की यू-ची जाति ने 165 ई0पू0 में पराजित कर खदेड़ दिया यही सीथीयन भारत में आकर बस गये और शक कहलाए
- तक्षशिला का शक शासक मेउस या मोग का सर्वप्रथम उल्लेख मिलता है।
- शकों की दो शाखाएं बन गयी:-
  (1) तक्षशिला व मथुरा के उतरी क्षत्रप
  (2) महाराष्ट्र व उज्जैन के पशिचमी क्षत्रप (क्षहरात)
- शक शासक नहपान को सातवाहन शासक गौतमी पुत्र शातकर्णि ने पराजित किया
- शक शासक रूद्रदमन ने वशिष्ठी पुत्र पुलुमावी को पराजित किया रूद्रदमन ने जुनागढ़(गुजरात) में चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में बनवायी गयी सुदर्शन झील की मरम्मत करके वहां संस्कृत में एक अभिलेख स्थापित किया। रूद्रदमन शैव धर्म का अनुयायी उदार शासक था।
- शक शासक ब्राहमण धर्म के अनुयायी थे।

कुषाण वंश

- कुषाण वंश चीन की प्राचीन जाति यू-ची की एक शाखा थी अथार्त **कुषाण नोर्थ सेन्ट्रल एशिया के खानाबदोश थे।**
- कुषाण वंश का संस्थापक कुजुल कडफिसस (15ई0) था
- विम कडफीसस ने साम्राज्य का विस्तार किया तथा शिव नन्दी तथ त्रिशुलधारी शिव के चित्र युक्त सिक्के चलाए
- **कुषाण वंश सर्वश्रेष्ठ व प्रसिद्ध शासक कनिष्क था।**
- कनिष्क ने अपने राज्यारोहन 78ई0 से शक सम्वत की शुरूआत की जो वर्तमान में भारत का राष्ट्रीय संवत है।
- कनिष्क का साम्राज्य पूर्व में पाटलिपुत्र, पश्चिम में बैक्ट्रिया तथा उतर में खेातान तक विकसित था।
- कनिष्क की राजधानी पुरूषपुर (वर्तमानप पेशावर) थी। मथुरा को द्वितीय राजधानी का दर्जा प्राप्त था।
- कनिष्क बौद्ध धर्म के महायान सम्प्रदाय का अनुयायी एंव संरक्षक था।
- कनिष्क के काल में चतुर्थ बौद्ध संगीती का आयोजन कश्मीर में हुआ था।
- कनिष्क के दरबार में प्रसिद्ध विद्वान चरक, बौद्व विद्वान पार्श्व , वसुमित्र अश्वघोष व नागार्जुन रहते थे।
- **चरक संहिता मेडीसीन ग्रन्थ है।**
- कनिष्क कला धर्म व संस्कृति का महान संरक्षक था।
- चीन, उतर पश्चिम भारत व यूरोप को जोड़ने वाला प्रसिद्व रेशम मार्ग इसके राज्य से होकर गुजरता था।
- भारत में सर्वप्रथम सोने के चित्रयुक्त सिक्कों का निमार्ण हिन्द यवन शासकों ने किया परन्तु इन्हे प्रचलित करने का श्रेय कुषाण शासकों को है।

मौर्योतर काल में कला व संस्कृति

- मूर्ति पूजा की शुरूआत
- **मूर्तिकला की गांधार शैली यूनानी प्रभाव (ग्रीक रोमन शैली) से युक्त थी यह उतर पश्चिम भारत में प्रचलित थी इस शैली में बुद्ध मूर्तियों की प्रधानता थी**
- मथुरा शैली पूर्णतया भारतीय थी तथा उतर मध्य भारत में प्रचलित थी इस शैली में बौद्ध,शैव,वैष्णव व जैन मूर्तियों का निमार्ण हुआ
- अमरावति शैली दक्षिण भारत में प्रचलित थी
- कई पुराणों व स्मृति ग्रन्थों की रचना हुयी
- महायान सम्प्रदाय का प्रचार रहा
- संस्कृत व प्राकृत भाषा का विकास

मौर्योतर काल में अर्थव्यवस्था

- प्रथम शताबदी में ग्रीक नाविक हिप्पलस ने मानसुनी हवाओं की खोज की जिससे भारत से समुद्री व्यापार में वृद्धि हुयी
- व्यापार व्यवसायों का संचालन व नियंत्रण व्यापारी व शिलपी संघों के द्वारा होता था जिन्हे श्रेणी कहते थे।
- श्रेणी प्रमुखों को ज्येष्ठ, जेठठक या श्रेष्ठी कहते थे।
- श्रेणियां स्वायतशाषी थी इन्हे अपने नियम, ध्वज,सिक्के व चिनह जारी करने का अधिकार था
- श्रेणी नियमों को राजकीय मान्यता प्राप्त थी श्रेणियां धन को धरोहर के रूप में रखकर उनसे प्राप्त धन के ब्याज से दाता की इच्छानुसार धार्मिक व सामाजिक कार्यो को लम्बे समय तक करती थी
- श्रेणिंया बैंक का कार्य भी करती थी
- समुद्री मार्ग में पूर्वी तट पर ताम्रलिपति(बंगाल), अरिकमेडू (पांडीचेरी) कावेरीपतनम (तमिलनाडू) प्रमुख बन्दरगाह थे।
- समुद्री मार्ग में पश्चिमी तट पर बारबरीकम(सिन्ध), भृगुकच्छ या बेरीगाजा (भड़ौच) शूर्पारक (सोपरा) प्रमुख बन्दरगाह थे।

दक्षिण भारत व संगम काल

- दक्षिण भारत में तीसरी शताब्दी के आसपास का ईतिहास संगम काल कहलाता हैं
- **संगम कवि अकादमी को कहते है।**
- **कुरल इस युग का प्रसिद्व महाकाव्य है जिसके लेखक तिरूवल्लूर हैं।**

- **प्रमुख संगम:-**

संगम	स्थान	संरक्षक	प्रमुख रचना
प्रथम	मदुरै	पांडय	अक्कतियम
द्वितीय	अलैवे या कपाटपुरम	पाडंय	तोलकप्पियम (तमिल व्याकरण अगस्तय ऋषि के शिष्य तोलकप्पियम ने लिखी)
तृतीय संगम	उतरी मदुरै	पाडंय अध्यक्षता नक्कीरर	परिपादल

- चोल चेर व पाण्डय वंशों के शासन
- संगम काल में दक्षिण भारत में आर्य संस्कृति का प्रचार
- तिरूक्कुरल ग्रन्थ को तमिल भूमि की बाईबल कहते है।
- विदेशी व्यापार व सामाजिक जीवन के ग्रन्थ शिल्पदिकारम के रचनाकार इलांगो आदिगल थे।
- 200 से 300 ई0पू0 में भारत का राजनैतिक दृष्टि से एक होना विदेशी व्यापार की उन्नति का प्रमुख कारण था।
- ललित कलाओं का वर्णन मणिमैकले ग्रन्थ में मिलता है जिसकी रचना सतनार ने की
- तमिल रामायण के रचियता कम्बन थे जिसमें रावण को राम से श्रेष्ठ बताया है।
- चोल वंश का प्रमुख शासक **करिकाल** था।
- चेर वंश का प्रमुख शासक सेनगुट्टुवन था।
- **पदिटुप्पतु चेर राजाओं की स्तुतियों का संग्रह है।**

- पाण्डय वंश का प्रमुख शासक नेडुनझेलियन था।

गुप्त काल

- गुप्त वंश का संस्थापक श्री गुप्त
- श्री गुप्त स्वतन्त्र शासक नहीं था वो लिच्छवियों या शकों का सामन्त था
- श्री गुप्त के बाद घटोत्कच गुप्त शासक हुआ

चन्द्रगुप्त प्रथम (319 से 334 ई0)

- गुप्त वंश का प्रथम स्वतन्त्र व शक्तिशाली राजा
- अपने राज्यारोहण के समय 319-320 ई0 से गुप्त संवत प्रारभं किया
- लिच्छवि वशं की राजकुमारी कुमार देवी से विवाह करके अपने वंश की प्रतिष्ठा बढाई
- चन्द्रगुप्त प्रथम व कुमार देवी के चित्रों से युक्त सोने के सिक्के जारी किये।

समुद्रगुप्त (335 से 380 ई0)

- **चन्द्रगुप्त प्रथम का पुत्र**
- समुद्रगुप्त की विजयों का उल्लेख उसके मंत्री व कवि हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति में मिलता हैं
- प्रयाग पशस्ति अशोक के इलाहाबाद स्तंभ पर संस्कृत में खुदा हैं।
- आर्यावत उतर भारत को कहते थे। समुद्रगुप्त ने आर्यावत के 9 राजाओं को पराजित किया
- दक्षिणापथ दक्षिण भारत को कहते थे समुद्रगुप्त दक्षिण भारत के 12 राजाओं को पराजित किया
- श्रीलंका के राजा मेघवर्मन ने समुद्रगुप्त को उपहार भेजकर बोद्धगया में एक विहार बनवाने की अनुमति प्राप्त कर विहार बनवाया
- समुद्रगप्त ने अश्वमेघ यज्ञ भी किया था
- समुद्रगुप्त कवि विद्वान वीर व वीणा वादन में कुशल था।
- समुद्रगुप्त के विजय अभियान तथा युद्ध में न हारने के कारण भारत का नेपोलियन भी कहा जाता है।

चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य 380 से 412 ई0)

- विशाखदत के ग्रन्थ देवीचन्द्रगुप्तम में उल्लेख है कि इससे पहले इसके भाई रामगुप्त का शासन था जो शकों से पराजित होकर अपनी पत्नी धुव्रदेवी उनको सौंप रहा था परन्तु चन्द्रगुपत द्वितीय ने शक राजा व रामगुप्त को मारकर धुव्रदेवी से विवाह कर लिया

- दिल्ली के पास महरौली का लौह स्तंम्भ बनवाया
- इसके दरबार में कालिदास वराहमिहर धन्वन्तरि, अमरसिंह वररूची आदि नवरत्न थे
- **वराहमिहर भीनमाल का था।**
- चीनी यात्री फाहयान इसी के काल में 399 से 414 ई0 में भारत आया **फाहयान ने ब्राहमणों की योग्यता और नैतिक जीवन की प्रशंसा की है।**
- **चन्द्रगुप्त द्वितीय ने सर्वप्रथम चांदी के सिक्के चलवाये।**

कुमारगुप्त महेन्द्रादित्य (412 से 455 ई0)

स्कन्दगुप्त क्रमादित्य (455 से 467 ई)

- इसके काल में सौराष्ट्र के सामन्त (गवर्नर) पर्णदत ने प्रसिद्व सुदर्शन झील की मररम्त करवायी
- स्कन्दगुप्त के बाद गुप्त साम्राज्य कमजोर पड़ गया तथा पुरूगुप्त, कुमारगुप्त द्वितीय, बुद्धगुप्त, नरसिंहगुप्त आदि कमजोर व अयोग्य शासक हुए

गुप्त काल में प्रशासनिक व्यवस्था

- अधिकारियों के वर्ग को अमात्य कहते थे।
- प्रान्तों को भुक्ति कहते थे

अधिकारी या मंत्री	कार्य
उपरिक या भौगिक	भुक्ति का प्रमुख
विषयपति	जिला प्रमुख
पुरपाल	नगर प्रमुख
ग्रामिक	ग्राम प्रमुख
कुमारमात्य या युवराज	प्रान्तीय प्रमुख
सन्धिविग्राहिक	युद्ध एंव विदेशी मामलों का मन्त्री
महाबलाधिकृत	प्रधान सेनापति
महादण्ड नायक	पुलिस प्रमुख
सर्वाध्यक्ष	मुख्य सचिव
धर्ममहापात्र	नैतिक सिद्वान्तों का प्रचार

गुप्त काल में सामाजिक व आर्थिक व्यवस्था

- वर्ण व्यवस्था पूर्णत जन्म पर आधारित हो गयी थी
- जाति बन्धन कटोर हो गये
- कर्मकाण्ड में वृद्वि
- शुद्रों की स्थिति में सुधार आया वे कृषि कार्य कर सकते थे।
- शुद्रों को रामायण महाभारत व पुराण सुनने का अधिकार था
- दास प्रथा प्रचलित थी
- स्त्री शिक्षा में कमी तथा सती प्रथा प्रारंभ होने से स्त्रीयों की स्थिति में गिरावट **स्त्रीयों के सामाजिक जीवन में अभाव से उनकी दशा में गिरावट का पता चलता है।**
- विधवा विवाह स्त्री धन तथा सामाजिक धार्मिक कार्यों में स्त्रियों की अनिवार्य उपस्थिति से उनको सम्मान भी प्राप्त था।
- **गाायन व नृत्य लोकप्रिय खेल थे जिनमें स्त्री व पुरूष मिलकर भाग लेते थें।**
- फाहयान ने लोगों के उच्च नैतिक स्तर व श्रेष्ठ जीवन की प्रशंसा की है।
- भू राजस्व आय का प्रमुख स्त्रोत
- **गुप्त काल में पैठन प्रमुख व्यापारिक मण्डी थी।**
- **साधारण आवश्यकता की वस्तुएं कौड़ियों में उपलब्ध**
- **सामन्तवाद का प्रारंभ गुप्तकाल की कृषि व्यवस्था का महत्वपूर्ण लक्षण था**
- उपज का 1/6 से लेकर 1/2 भू राजस्व
- ब्राहमणों एंव अधिकारियों को वेतन के बदले कर मुक्त भूमिदान
- ब्राहमणों को दी भूमि ब्रह्मदेय तथा ग्राम अग्रहार कहलाते थे।

- भू स्वामियों व शासकों द्वारा कृषकों व मजदूरों से करायी जाने वाली बेगार को विष्टी कहते थे।
- **व्यापारियों तथा शिल्पियों की श्रेणियों का अस्तितव अब भी था।**
- प्रारभिंक काल में मुद्रा प्रणाली का काफी विकास हुआ परन्तु उतर काल में मुद्रा वयवस्था का पतन होने लगा।
- **गुप्त काल में विशाल जलयान निमार्ण में भारत युरोप से आगे था ताम्रलिप्ति इस काल का प्रमुख बन्दरगाह था जहां से जहाज दक्षिण पूर्वी देशों को रवाना होते थे।**

गुप्त काल में धार्मिक व्यवस्था

- ब्राहमण धर्म का विस्तार हुआ जो आगे चलकर हिन्दू धर्म के नाम से प्रचलित हुआ
- **हिन्दू धर्म आस्तिकता के मामले में जैन व बौद्व धर्म से भिन्न है।**
- अधिंकाश गुप्त शासक वैष्णव धर्म के अनुयायी थे तथा परम भागवत की उपााधि एंव गरूड़ राजकचिन्ह धारण करते थे।
- हिन्दू धर्म का पुनरूत्थान हुआ
- शैव शाक्त व सूर्य पूजा का प्रचलन भी बढ़ गया
- नालन्दा का बौद्ध विहार गुप्त काल में बना था जिसे गुप्त शासकों ने 200 गांव दान में दिये थे।
- द्वितीय जैन संगीती का वलभी में आयोजन गुप्त काल के अन्त में हुआ था।
- पंजाब अफगानिस्तान मध्य भारत में बौद्ध धर्म व मथुरा वलभी(गुजरात) व पुण्ड्रवर्धन (बंगाल)कर्नाटक में जैन धर्म उच्च अवस्था में था।

गुप्त काल में कला व साहित्य

- गुप्त काल को प्राचीन भारत का स्वर्णयुग माना जाता है।
- भारत में प्राप्त प्राचीनतम मंदिर भूमरा (सतना)का शिव मंदिर गुप्तकाल का है
- अत: **मंदिर निमार्ण की शुरूआत गुप्त काल में हुयी**
- देवगढ़ (झांसी) का दशावतार मंदिर प्रथम शिखरयुक्त मंदिर है।
- सारनाथ का धामेख स्तूप गुप्त काल की देन है।
- मथुरा सारनाथ व पाटलिपुत्र गुप्तकाल में मूर्तिकला के केन्द्र थे
- गुप्त काल की धम्रचक्रप्रवर्तन अवस्था में बुद्ध की मूर्ति सारनाथ में है।
- गुप्तकाल की शेषशायी विष्णु की मूर्ति शिवगढ़ में है।
- गुप्तकाल की वराह की मूर्ति उदयगिरी में है।
- प्राचीन भारत के प्रमुख ग्रन्थ व रचियता:-

ग्रन्थ	**रचियता**
पाणिनी	**अष्टाध्यायी(व्याकरण)**
पंतजलि	महाभाष्य(व्याकरण)
कालिदास (भारत का शेक्सपियर)	नाटक:- मालविकाग्निमित्रम, विक्रमोर्वशीयम, अभिज्ञानशाकुनतलम महाकाव्य:- ऋतुसंहार, मेघदूत,कुमारसमभव, रघुवंश
भारवि	किराताजुर्नीयम
शुद्रक	मृच्छकटिकम
विशाखदत	मुद्राराक्षस, देवीचन्द्रगुप्तम
भास	स्वपनवासदता
अमरसिंह	अमरकोष(शब्द व्याकरण)
विष्णुशर्मा	पंचतन्त्र (विश्व की कई भाषाओं में अनुदित)
भट्टि	भट्टि काव्य
वातस्यायन	कामसूत्र
कामन्दक	नीति शास्त्र
चन्दगोमिन	चन्द्र व्याकरण
वसुबन्धु	अभिधर्मकोष (बोद्ध ग्रन्थ)

बुद्धघोष	विशुद्विमग्ग
आर्चाय सिद्वसेन	न्यायवार्ता
वराहमिहिर	वृहतसंहिता, पंचसिद्धान्तिका
आर्य भट्ट	आर्यभट्टीय, सूर्य सिद्धान्त, **रोमक सिद्धान्त**
नागार्जुन	माध्यमिक सूत्र, रस रत्नाकर
वाग्भट्ट	आयुर्वेद ग्रन्थ अष्टांग हृदय
धन्वन्तरी	नवनीतकम(आयुर्वेद ग्रन्थ)
भरतमुनि	नाटय शास्त्र
मेरूतुंग	**प्रबंध चिन्तामणि**

- अजन्ता बाघ गुफाओं में सातवाहन गुप्त व वाकाटक काल में वास्तुकला व चित्रकला प्रथम शताब्दी से सातवीं शताब्दी में हुयी
- अजन्ता गुफाओं के चित्र बोद्ध धर्म की जातक कथाओं से संबधित है।
- गुप्त काल में पल्काप्य नामक श्रेष्ठ पशु चिकित्सक था।
- धन्वन्तरि व वाग्भट्ट नामक चिकित्सक थे
- नागार्जुन रसायन शास्त्री था
- आर्यभटट व भास्कर प्रथम जैसे गणितज्ञ थे
- **आर्यभट्ट कुसुमपुर पटना का रहने वाला था।**
- **आर्यभट्ट ने पृथ्वी अपनी धुरी पर घुमती है यह सर्वप्रथम पता लगाया।**
- वराहमियर व ब्रहमगुप्त जैसे ज्योतिष वैज्ञज्ञनिक थे।
- सुल्तानगंज से प्राप्त बुद्ध की विशाल ताम्र प्रतिमा व महरौली का लौह स्तभं गुप्त काल की उन्नत धातुकला के उदाहरण है महरौली का लौह स्तंभ 1700 वर्ष से आज तक जंगमुक्त है।

हर्षवर्धन (606 से 647 ई0)

- थानेश्वर के चतुर्थ शासक प्रभाकर वर्धन का पुत्र हर्षवर्धन वर्धन वंश का श्रेष्ठ शासक था।
- अपने बड़े भाई राज्यवर्धन के युद्ध में मारे जाने पर राजा बना
- हर्षवर्धन की विधवा बहन राज्य श्री कन्नौज के मौखरि वंश की रानी थी का सरंक्षक होने के नाते हर्ष ने कन्नौज पर भी अधिकर कर लिया
- थानेश्वर के बाद हर्ष ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया
- हर्ष ने सम्पूर्ण भारत पर अपना अधिकार कर लिया परन्तु चालुक्य वंश के पुलकेशिन द्वितीय से पराजित हो गया
- हर्ष सम्पूर्ण व एकीकृत उतर भारत का अतिंम हिन्दू शासक था।
- हर्ष ने नागानन्द रत्नावली व प्रियदर्शिका नामक संस्कृत नाटकों की रचना की
- **हर्ष के राजकवि बाणभट्ट ने हर्षचरित व कादम्बरी की रचना की**
- हर्ष बौद्ध धर्म का अनुयायी था
- **चीनी यात्री हवेनसांग हर्ष के काल में आया था**
- **हवेनसांग ने नालन्दा विश्वविधालय में शिक्षा प्राप्त की**
- हवेनसांग ने हर्ष के प्रत्येक पांच वर्ष बाद प्रयाग की एक सभा में अपना सर्वस्व दान कर देने का उल्लेख किया है।
- **हर्ष के काल में उपज का आधा भाग भू राजस्व लिया जाता था।**
- **हर्ष की मृत्यू 647 ई0 में**
- हर्ष के बाद 400 वर्ष तक भारत में छोटे छोटे राजवंशों में सता प्राप्ति के लिये संघर्ष होता रहा इसमें कन्नैज पर शासन के लिये प्रतिहार पाल व राष्ट्रकूट में त्रिकोणात्मक संघर्ष 100 वर्ष तक रूक रूक कर जारी रहा अतं में कन्नौज पर प्रतिहार वंश ने शासन किया

बंगाल का पाल वंश

- 750 ई0 में गोपाल नामक व्यक्ति ने की

- गोपाल का पुत्र धर्मपाल एक प्रतापी राजा था
- धर्मपाल प्रतिहार शासक वत्सराज से पराजित हुआ
- बाद में पुनः कन्नौज को जीतकर अपने संरक्षण में चक्रायुद्ध को शासक बनाया
- धर्मपाल राष्ट्रकुट शासक ध्रुव से भी पराजित हुआ था
- धर्मपाल बौद्ध धर्म का अनुयायी था तथा इसने विक्रमशाीला बौद्ध विश्वविधालय की स्थापना की थी
- धर्मपाल नालन्दा विश्वविधालय का भी संरक्षक था। **नालन्दा विश्वविधालय में भारत के अलावा तिबबत और चीन से भी विधार्थी आते थे।**
- धर्मपाल का पुत्र देवपाल भी बौद्ध धर्म का अनुयायी था।
- **देवपाल ने शैलेन्द्र राजा बालपुत्रदेव द्वारा नालन्दा में निर्मित एक विहार के लिये पांच सौ गांव दान में दिये।**
- देवपाल के काल में अरबी यात्री सुलेमान ने भारत यात्रा की।
- **पाल शासक बौद्ध धर्म के अनुयायी थे।**
- **पाल शासकों के काल में भारत के व्यापारिक संबध साउथ इस्ट एशिया से थे।**

गुर्जर प्रतिहार वंश

- **गुर्जर प्रतिहार शासक अग्निकुल राजपूत के नाम से भी जाने जाते थे।**
- आठवी शताबदी में सिन्ध की ओर से होने वाले आक्रमणों को रोकने का सफल प्रयास किया था।
- संस्थापक उज्जैन का नागभट्ट प्रथम (735 से 760 ई0) था।
- 780 ई 0 में वत्सराज ने कन्नौज पर अधिकार करके इन्द्रायुद्ध को शासक बनाया तथा पाल नरेश धर्मपाल को पराजित किया
- वत्सराज राष्ट्रकुट शासक धुव्र से पराजित हुआ
- नागभट्ट द्वितीय (805 से 833 ई0) ने कन्नौज पर अधिकार करके उसे अपनी राजधानी बनाया
- मिहिरभोज(836 से 885 ई0) सबसे प्रतापी गुर्जर प्रतिहार राजा था।
- **मिहिरभोज विष्णुभक्त था उसने आदि वराह उपाधि धारण की तथा आदिवराह द्रम्म सिक्के चलाये।**
- अरब यात्री सुलेमान ने मिहिरभोज की विशाल सेना की प्रशंसा की है।
- प्रतिहार शासक महेन्द्रपाल व उसके पुत्र महिपाल के दरबार में महान कवि व नाटककार राजशेखर रहता था।
- राजशेखर महेन्द्रपाल का गुरू था।
- कर्पूरमंजरी, काव्यमीमांसा, बाल भारत, बाल रामायण राजशेखर के प्रमुख ग्रन्थ है।
- महिपाल के शासन काल में अरब यात्री अलमसूदी ने यात्रा की।

राष्ट्रकुट

- राष्ट्रकूट वंश की स्थापना दन्तिदुर्ग ने चालुक्यों **राजा कीर्तिवर्मा द्वितीय** को पराजित करके की थी
- इनकी राजधानी मान्यखेट थी
- दन्तिदुर्ग के पश्चात कृष्ण प्रथम शासक हुआ
- कृष्ण प्रथम ने एलोरा में पर्वत काटकर शिव मन्दिर का निर्माण करववाया
- राष्ट्रकुटों का प्रथम महान शक्तिशाली शासक धुव्र था।
- धुव्र ने त्रिकोणातमक संघर्ष में प्रतिहारों व पालों को हराया तथा **प्रतिहारों व पालों पर जीत की खुशी में ध्रुव ने गंगा व जमुना के चिन्हों को राष्ट्रकूट कुल चिन्ह (एम्बलम) में शामिल किया**
- गोविन्द तृतीय ने प्रतिहार नागभटट व धर्मपाल को पराजित किया इसने श्रीलंका के शासकों से भी अपनी अधिनता स्वीकार करायी इसने चोल पांडय व कांची नरेशों को भी पराजित किया
- राष्ट्रकूट नरेश अमोघवर्ष प्रतिहार मिहिरभोज से पराजित हुआ
- अमोघवर्ष जैन था इसके दरबार में आदि पुराण के रचियता जिनसेन रहते थे।
- अमोघवर्ष ने कन्न्ड़ भाषा में काव्यशास्त्र पर कविराज मार्ग ग्रन्थ लिखा।
- इन्द्र तृतीय व कृष्ण तृतीय दो श्रेष्ठ शासक राष्ट्रकुट वंश में हुए
- **कृष्ण तृतीय ने रामेश्वरम में अपना विजय स्तम्भ बनाया**
- **गुर्जर प्रतिहार, पाल व राष्ट्रकुट केन्द्रीकृत राजतंत्र नहीं थे।**

राजपूत वंश

- राजपूतों की उत्पति के निम्न सिद्धान्त है:-

इतिहासकार	**सिद्वान्त**
गौरीशंकर ओझाा व सी0वी0 वैध	भारतीय मूल के सूर्यवंशी व चन्द्रवंशीय
स्मिथ टोड कनिंघम डा0 ईश्वरी प्रसाद	शक व हुण विदेशी जातियों से
चन्दबरदाई (पृथ्वीराज रासो में)	आबू पर्वत पर वशिष्ठ ऋषि के अग्निकुंड से

- राणा सांगा व राणा प्रताप का सिसौदिया वंश था
- राजा भोज परमार वंश का था
- **भोज परमार ने समरागंणसूत्रधार ग्रन्थ की रचना की।**
- **राजपूत परम्परा में धार्मिक सहिष्णुता एक उल्लेखनीय तत्व था जो आज भी दर्शनीय है परन्तु एकता का अभाव था।**

चन्देल वंश

- **यशोवर्मन चन्देल वंश के कन्नौज के शासक थे।**
- **धंगदेव यशोवर्मन का पुत्र था।**
- **चन्देल शासक धनगा के काल में स्वतन्त्र शक्ति बनकर उबरे**
- खजुराहो के विष्णु मंदिर का निमार्ण यशोवर्मन ने करवाया
- **चन्देल शासकों को खजुराहो के भव्य मंदिरों के लिये सर्वाधिक श्रेय जाता है।**
- धंगदेव व परमार्दिदेव चन्देल वंश के थे।

मध्यकाल के प्रमुख राजवंश व राज्य

राजवंश	**राज्य**
उतर गुप्त	मगध
मौखरि व गहड़वाल	कन्नौज
पुष्यभूति या वर्धन	थानेश्वर
मैत्रक	वलभी
शंशाक	गौड़
प्रतिहार व परमार	मालवा
चन्देल	जेजाकभुक्ति (बुन्देलखण्ड)
कलचुरि	चेदी (त्रिपुरी)
चौहान	अजमेर व दिल्ली
पाल व सेन	बंगाल
हिन्दूशाही	पश्चिमोतर पंजाब
कार्काट, उत्पल, लोहर	कश्मीर
पूर्वी गंग	उड़ीसा
बर्मन	कामरूप (असम)
सोलंकी (चालुक्य)	गुजरात
राष्ट्रकूट	दक्कन (मान्यखेत)
वाकाटक	मध्य दक्षिण
चालुक्य	बादामी
पश्चिम चालुक्य	कल्याणी
पूर्वी चालुक्य	वेंगी
पललव	कांची
चोल	तमिलदेश
पाण्डय	मदुरा
यादव	देवगिरी
काकतीय	वारांगल
होयसाल	**द्वारसमुद्र (वर्तमान हलेबिड)**

पल्लव वंश

- संस्थापक सिंहविष्णु था
- राजधानी कांची
- सिंहविष्णु के पश्चात महेन्द्रवर्मन प्रथम हुआ
- महेन्द्रवर्मन प्रथम के काल में हवेनसांग ने कांची यात्रा की
- महेन्द्रवर्मन प्रथम साहित्य संगीत कला प्रेमी था।
- महेन्द्रवर्मन प्रथम ने मतविलासप्रहसन नामक नाटक लिखा।
- महेन्द्रवर्मन प्रथम का उतराधिकारी नरसिंह वर्मन प्रथम उर्फ मामल्ल था।
- नरसिंह वर्मन प्रथम ने चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय को पराजित किया
- नरसिंह वर्मन प्रथम मामल्ल ने मामल्लपुरम (महाबलीपुरम) की स्थापना की

चालुक्य वंश

- संस्थपक पुलकेशिन प्रथम
- पुलकेशिन द्वितीय (611 से 654 ई) इस वंश का महान शासक था
- पुलकेशिन द्वितीय ने हर्ष को पराजित किया
- एहोल प्रशस्ति का रचियता रविकिर्ती इसका दरबारी कवि था
- पुलकेशिन द्वितीय के राज्य में हवेनसांग व फारस के शाह खुसरो का दुतमण्डल आया था।
- चालुक्य वंश की राजधानी वातापी (बादामी) थी

प0 चालुक्य वंश

- स्थापना कल्याणी में तैलप द्वितीय ने की
- इस शाखा का प्रसिद्व शासक विक्रमादित्य चतुर्थ था जिसके दरबार में विक्रमांकदेवचरित के रचियता विल्हण व मिताक्षरा के रचियता विज्ञानेश्वर रहते थे।
- विरूपाक्ष विष्णु मदिंर, लोकेश्वर मदिंर, एहोल का विष्णु मंदिर चालुक्य स्थापत्य कला के उदाहरण है।

चोल वंश

- संगम काल के पश्चात नौवीं शताब्दी में चोलों का पुनरूत्थान विजयालय ने किया **विजयाजय ने तंजौर को अपनी राजधानी बनाया**
- राजराज (985 से 1012 ई) व राजेन्द्र प्रथम (1012 से 1044 ई0) इस वंश के श्रेष्ठ व प्रसिद्व शासक थे।
- राजराज ने मालद्वीप व श्रीलंका के उतरी भाग को जीता
- राजेन्द्र प्रथम ने सम्पूर्ण लंका, चेर, पाण्डय, पूवी चालुक्य, दक्षिण पूर्व एशिया में श्री विजय साम्राज्य को जीता
- राजेन्द्र प्रथम ने दक्षिण से उतर की ओर प्रथम विजय अभियान चला कर गंगा नदी के तट तक अभियान किया उसके पश्चात गंगैकोडचोल की उपाधि धारण कर गंगैकोडचोलपुरम नामक नई उपाधि धारण की
- कुलोतुंग प्रथम नामक उदार शासक ने श्रीलंका को स्वतन्त्र कर दिया
- तंजौर का राजराजेश्वर मंदरि, गगैकोडचोलपुरम का मदिंर, सुब्रहमण्यम मंदिर, नटराज की मूर्तियां आदि चोल कला का उदाहरण है।
- **चोल साम्राजय में लगान वसूली का दायित्व राज्य कर्मचारियों का था।**
- **राजा कावेरी नदी पर बांध व नहरें बनवाता धा।**
- **पुहार नामक पतन कावेरी नदी के मुहाने पर स्थित था।**
- **राजेन्द्र द्वितीय का राज्याभिषेक युद्ध भूमि में हुआ।**
- **चोल साम्राज्य की मुख्य विशेषता स्थानीय स्वायत प्रशाशन थी**

भारत पर मुस्लिम आक्रमण

- भारत पर प्रथम मुस्लिम आक्रमण मिस्त्र खलीफा के आदेश पर फारस के गर्वनर अलहज्जाज की सेना ने अलहज्जाज के भतीजे मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में किया।
- **घुड़सेना का इस्तेमाल तुर्को की विजय का प्रमुख कारण थी।**
- लोहे की रकाब के आविष्कार व वजन ढोने वाले साज के आवष्किार से घुड़सेना का महत्व बढ़ गया

- मुहम्मद बिन कासिम ने 712 ई0 में सिन्ध के ब्राहमण शासक दाहिर को पराजित किया। **दाहिर पर आक्रमण का तात्कालिक उदेश्य उसे दण्ड देना था।**
- मुहम्मद बिन कासिम का शासन स्थायी नहीं रह सका

महमूद गजनवी

- **गजनी अफगानिस्तान के शासक सुबुक्तगीन का पुत्र था**
- वीर सैनिक था धार्मिक कट्टरता तथा असहिष्णुता का प्रतिक था
- महत्वाकांक्षी व लुटेरा था
- 1000 ई0 से 1027 ई0 तक 17 बार भारत पर आक्रमण किया **इन आक्रमणों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रभाव धन की लूट था।**
- यह प्रथम व्यक्ति था जिसको खलीफा से सुल्तान(खलीफा का उपराजा) की उपाधि मिली थी
- खलिफा ने इसको अमीन उल मिल्लत (इस्लाम का रक्षक) की उपाधि दी
- अमीन उद दौला (खलीफा का दांया हाथ)की उपाधि भी प्राप्त की
- गजनवी ने प्रथम आक्रमण पंजाब के शाही वंश के जयपाल पर किया
- गजनवी ने दुसरा आक्रमण जयपाल के पुत्र आन्नद पाल पर किया जिसने उतर भारत के कई राजाओं के साथ संघ बनाकर युद्ध किया किन्तु पराजित हुआ
- 1019 व 1022 ई0 में कलिंजर के चन्देल शासक विधाधर से गजनवी हार गया और संधि करके वापस लौट गया
- गजनवी ने 1025 ई0 में गुजरात के सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण किया तथा भारी मात्रा में सोना व धन प्राप्ज किया और मूर्ति को तोड़कर अपमानित किया
- **सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्वार अणहिलपाटन के कुमारपाल ने किया।**
- **अलबरूनी महमूद गजनवी का समकालिन था**

मुहम्मद गौरी

- अफगाानिस्तान के गौर प्रदेश का मुहम्मद गौरी 1173 में गजनी का शासक बना
- गुजरात पर 1178 ई0 में आक्रमण के समय यह चालुक्य वंश के शासक भीम से आबूपर्वत के निकट हार गया था
- 1191 ई0 में मुहम्मद गौरी तराईन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान से पराजित हुआ
- 1192 ई0 में तराईन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को हराकर दिल्ली पर अधिकार कर लिया
- गौरी व उसके गुलाम सेनापति कुतुबदीन ऐबक ने 1194 में चन्दावर (ईटावा) के युद्व में कन्नौज के गहड़वाल शासक जयचन्द को पराजित किया
- **गौरी ने संस्कृत लेख यक्त सिक्के चलाये।**
- बिहार व बंगाल में गौरी के सेनापति बख्तियार खिलजी ने लक्ष्मणसेन को हराकर अपना शासन स्थापित किया
- इसी अभियान में बिहार से लौटते समय बख्तियार खिलजी ने नालन्दा विश्वविधालय पर हमला कर उसे नष्ट कर दिया।
- ऐबक को दिल्ली व लाहौर का गर्वनर बनाकर गोरी वापस गजनी लौट गया जहां 1206 ई0 में उसकी मृत्यु हो गयी

दिल्ली सल्तनत

कुतुबदीन ऐबक (1206-1290 ई0)

- **दिल्ली सल्तनत की स्थापना 1206 ई0 में गुलाम वंश (1206 से 1290 ई0)के कुतुबदीन ऐबक ने की**
- गौरी की मृत्यु के बाद 1206 ई0 में कुतुबदीन गद्दी पर बैठा अपने दानी स्वभाव के कारण लाखबख्श भी कहा जाता था।
- इसने शेख कुतुबदीन बख्तियार काकी के सम्मान में कुतुबमीनार का निर्माण प्रारम्भ करवाया
- कुव्वतउल इस्लाम मस्जिद बनवायी
- **अजमेर में ढाई दिन का झौंपड़ा बनवाया**

इल्तुतमिश (1210-1236)

- ऐबक के बाद उसका पुत्र आरामशाह शासक बना था परन्तु तुर्क अमीरों ने उसे हटाकर उसके दामाद इल्तुतमिश को शासक बनाया
- इल्तुतमिश भारत का प्रथम वैध सुल्तान था क्यों कि उसने 1229 ई0 में खलिफा से मान्यता प्राप्त की थी
- इसने सिंध व मुल्तान (1217ई0) रणथम्भोर (1226ई0) जालोर बंगाल व साभंर (1230ई0) पर अधिकार किया
- **इश्तखरी ने मुल्तान के सुर्य मंदिर का वर्णन किया है।**
- चालीस विश्वासयपात्र अमीरों का संगठन तुर्कान ए चहलगानी बनाया
- कुतुबमीनार का निर्माण पूरा करवाया
- बदायुँ में हौज ए शम्स व जामी मस्जिद का निर्माण करवाया
- **इसने सोने का सिक्का टंक व तांबे का जीतल प्रचलित किया 175 ग्रेन का चांदी का टंका चलाया**
- इसने भारत में अक्ता व्यवस्था की शुरूआत की

रजिया सुल्तान

- **इल्तुतमिश ने रजिया को अपना उतराधिकारी नियुक्त किया था** परन्तु उसका भाई रूकनुदीन फिरोज शासक बन बैठा
- **फिरोज शांतिपूर्ण तरीके से सुल्तान बना**
- रूकनुदीन फिरोज को अपदस्त करके रजिया शासक बनी
- प्रथम मुस्लिम महिला सुल्तान
- रजिया ने विद्रोही उलेमाओं से पराजित होने पर एक अमीर अल्तूनिया से विवाह करके सता प्राप्त करने का प्रयत्न किया परन्तु पति सहित मारी गयी

नासिरूदीन महमूद

- इल्तुतमिश का पौत्र था
- लगभग 20 वर्ष तक शासन किया
- बलबन इसका नायब था

बलबन (1265-87 ई0)

- कठोर अनुशासन, पद की प्रतिष्ठा, उच्च वर्ग को प्राथमिकता पर बल दिया
- बलबन ने चहलगानी का अन्त किया
- सिजदा(सुल्तान के सामने हाथ बांध कर झुकना) व पाबौस(सुल्तान के पैर चूमना) की प्रथा शुरू की
- कठोर दण्ड की व्यवस्था की
- सैन्य व गुपतचर प्रणाली को मजबूत किया
- मेवात बंगाल व दोआब के विद्राहों को इदबाया
- बलबन स्वंय को फारस के पौराणिक अफरासियाब का वंशज कहता था
- **बलबन ने राजत्व का सिद्धान्त सासानी पर्शिया से ग्रहण किया था।**
- फारसी नववर्ष नौरोज को मनाने की प्रथा शुरू की
- बलबन के बाद दो अयोग्य शासक कैकुबाद व कैमूर्स थोड़े समय के लिये हुए

खिलजी वंश (1290-1320)

- जलालुदीन खिलजी ने बलबन के पौत्र सुल्तान कैमूर्स को बन्दी बनाकर स्थापना की
- बलबन की कठोर शासन प्रणाली में नरमी लाने के उपाय किये

अलाउदीन खिलजी (1296-1316 ई0)

- जलालुदीन खिलजी का भतीजा व दामाद अलाउदीन खिलजी उसकी हत्या करके सुल्तान बना
- अमीरों को नियंत्रण में करने के लिये शराब फिजुलखर्ची आपसी मेलजोल आदि पर प्रतिबंध लगाया
- प्रशासन व न्याय पर उलेमा वर्ग के प्रभाव को समाप्त किया
- **मुख्य काजी नियुक्त किया जिसे मुगिस सद्र उस सुदुर कहते थे**
- धर्म व राजकार्य को अलग किया। **उसका राजत्व का सिद्धान्त निरंकुशता था।**

- सिंकन्दर के समान विश्व विजयी बनना चाहता था।
- **अलाउदीन खिलजी ने कम वेतन पर अधिक सैनिक रखने के लिये बाजार नियंत्रण व्यवस्था लागु की।**
- **जियाउदीन बरनी की तारिख ए फिरोजशाही बाजार नियंत्रण नीती की जानकारी के लिये सबसे महत्वपूर्ण स्त्रोत है।**
- बाजार नियंत्रण व्यवस्था का प्रमुख दीवान ए रियासत होता था।
- **दोसीहट्ट कपड़ा बाजार था।**
- शाहना ए मण्डी निरीक्षक था।
- नाजिर नापतौल का अधिकारी था।
- परवाना नवीस परमिट देने वाल अधिकारी था।
- बरीद बाजार व्यवस्था से संबधित गुप्तचर था।
- इसने भूमि अनुदानों को समाप्त किया तथा दान दी गयी भूमि को वापस लिया
- अलाउदीन ने उपज का 50 प्रतिशत कर लेना शुरू किया
- अन्य कर जैसे चारागाह कर, गृह कर आदि लगाए
- हौज खास , अलाई दरवाजा , अलाई मीनार (अधुरी) जमायत खां मस्जिद (निजामुदीन दिल्ली), **सीरी किला (दिल्ली) का निर्माण करवाया**
- अलाउदीन ने गुजरात, चितौड़, रणथ्मभोर, मालवा आदि उतर भारत के राज्यों को जीता
- अलाउदीन ने देवगिरी वारंगल द्वारसमुद्र तथा पांडय आदि दक्षिण भारत के राज्यों को जीता
- अलाउदीन के दक्षिण अभियान का प्रमुख मलिक काफुर था जो अलाउदीन के लिये वारंगल के शासक से कोहिनूर हिरा लाया था।**वारंगल हाथी दांत उधोग के लिये प्रसिद्व था।**
- चितौड़ आक्रमण में राणा रत्नसिंह के मारे जाने पर रानी पदमावति ने जौहर कर लिया
- अलाउदीन ने स्थाई सेना रखने, सैनिकों का हुलिया रखने, तथा घोड़ों को दागने की प्रथा शुरू की
- अलाउदीन के बाद शहाबुदीन उमर, मुबारकशाह खिलजी व **नसीरूदीन खुसरो** शासक बने
- **कुतुबदीन मुबारकशाह खिलजी ने स्वंय को खलिफा कहा तथा अरब के खलिफा की सता को मानने से ईकांर कर दिया**

तुगलक वंश (1320-1413ई0)

- तुगलक वंश ने दिल्ली सल्तनत पर सर्वाधिक 94 वर्ष तक शासन किया।

गयासुदीन तुगलक (1320-25ई0)

- सीमान्त प्रान्त के गवर्नर गयासुदीन तुगलक या गाजी तुगलक ने नासिरूदीन खुसरो को युद्व में मारकर राज्य पर अधिकार कर लिया
- इसने अलाउदीन खिलजी द्वारा की गयी अत्यधिक कठोरता को कम किया
- खुसरो द्वारा बांटे गये अतिरेक धन को वापस मांगा जिसके कारण हजरत निजामुदीन औलिया से अनबन हो गयी
- ग्यासुदीन कृषि के विकास के लिये नहरें बनवाने वाला पहला सुल्तान था।
- इसने तुगलकाबाद का किला बनवाया तथा अपने ही मकबरे का निमार्ण शुरू करवाया

मुहम्मद तुगलक (1325-13514ई0)

- इसका अन्य नाम जूना खां था।
- महत्वाकांक्षी विद्वान जिद्दी, तार्किक जल्दबाज और पागल कहा जाता है।
- चार प्रमुख विवादित योजनाएं थी जो चारों ही असफल रही थी
    1. 1326-1327 में दिल्ली से दौलताबाद (देवगिरी) में राजधानी परिवर्तन किया
    2. 1330-32 में प्रतिक मुद्रा अर्थात ताबें के सिक्कों का प्रचलन
    3. 1332-34 में खुरासान व कराचिल अभियान
    4. 1333-34 में दोआब में असमय कर वृद्वि
- अलाउदीन खिलजी की तरह मो0 तुगलक ने भी धर्म को को राजनीति से अलग किया व न्याय वयवस्था पर उलेमा वर्ग का अधिकार समाप्त किया
- बाद में इसने भी खलीफा से मान्यता प्राप्त की

- **इब्नबतुता इसके दरबार में आया था जिसे तुगलक ने अपना दूत बनाकर चीन भेजा**
- इसके राज्यकाल में विजयनगर साम्राज्य तथा बहमनी राज्य की स्थापना हुयी
- **कृषि के विकास के लिये कृषि विभाग दीवान ए कोही खोला**

फिरोज तुगलक (1351-88 ई0)

- मुहम्मद तुगलक का चचेरा भाई था
- धर्मान्ध व मुस्लिमों के प्रति अत्यधिक उदार शासक
- नहरें अस्पताल दानशाला पाठशालाएं तथा मदरसे बनवाए
- **ज्यादा नहरें बनवाने के कारण नहर प्रणाली का जनक फिरोज तुगलक को माना जाता है।**
- कठोर दण्ड व्यवस्था समाप्त कर भ्रष्ट अधिकारियों को भी क्षमा
- उलेमा वर्ग को राजनीति में प्रमुखता
- शरीयत के अनुसार प्रशासन व कर की व्यवस्था की
- पुरी के जगन्नाथ मंदिर व कांगड़ा में ज्वाला देवी मंदिर को नुकसान पहुंचाया
- कई नगरों की स्थापना की तथा तोपरा व मेरठ से दो अशोक स्तम्भ मंगाकर दिल्ली में लगवाए।
- **फिरोज तुगलक द्वारा प्रारंभ जागीरदारी प्रथा वंश के पतन का कारण बनी**
- **दारूल शफा नामक खैराती अस्पताल प्रारंभ किया**
- **तुगलक वंश का अतिंम शासक नासीरूदीन मोहम्मद तुगलक था जिसके काल में 1398 में समरकंद के शासक तैमूर लंग ने आक्रमण किया तथा दिल्ली हरिद्वार मेरठ कांगड़ा व जम्मू में भारी लुटपाट व जनसंहार किया**

सैयद वंश (1414-1450)

- स्थापना खिज्र खां न जो पंजाब में तैमूर लंग का गर्वनर था।
- पूर्वज अरब से आए थे तथा स्वंय को पैगम्बर का वंशज बताते थे जिससे सैयद वंश नाम पड़ा
- खिज्र खां के बाद तीन शासक ओर हुए

लोदी वंश

- दिल्ली सल्तनत के इस प्रथम अफगान वंश की स्थापना बहलोल लोदी (1451-89) ने की थी
- बहलोल लोदी ने जौनपुर को भी दिल्ली में मिला लिया
- बहलोल का उतराधिकारी उसका पुत्र **सिकन्दर लोदी (1489-1517)** था जिसने भूमापन के लिये सिकन्दरी गज नामक प्रमाणिक गज बनवाया तथा 1504 में आगरा की स्थापना की
- इब्राहिम लोदी ने अफगान परम्परा से हटकर कठोर अनुशासन लागु किया इससे कई अमीर उससे नाराज हो गये
- **पंजाब के गवर्नर दौलत खां लोदी व इब्राहिम के चाचा आलम खां लोदी ने बाबर को भारत पर आक्रमण के लिये उकसाया** जिससे **1526 में बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्व में इब्राहिम लोदी को पराजित कर दिल्ली व आगरा पर अधिकार कर लिया।**

सल्तनत काल की प्रमुख परिभाषाएं:-

शब्द	अर्थ
अक्ता	यह ऐसी भूमि होती थी जो सैन्य अधिकारियों की वेतन के बदले में दी जाती थी यह अधिकारी इसके मालिक नहीं होते थे परन्तु इनको केन्द्रीय हिस्सा काटकर शेष लगान रखने व प्रशासन करने का अधिकार था।
मुक्ता या मलिक	अक्ता प्राप्त करने वाले अधिकारी
खालिसा भूमि	सीधे राजकीय नियंत्रण वाली भूमि इसकी आय केन्द्रीय कोष में जाती थी
खिराज	गैर मुसलामानों से लिया जाने वाला भूमि कर इसकी दर 1/10 से 1/2 तक हो सकती थी
उश्र	**मुस्लिम भूमिधरों से लिया जाने वाला भूमि कर जो उत्पादन का 1/10 होता था**

खम्स	युद्ध में लुट से प्राप्त धन जिसका 1/5 राजकोष में जमा होता था तथा 4/5 सैनिकों में बांटा जाता था
जजिया	जिमियों या गैर मुस्लमानों से लिया जाने वाला कर
जकात	मुस्लिमों से लिया जाने वाला धार्मिक कर जो 1/10 होता था तथा इसका प्रयोग धार्मिक कार्यो में होता था

सल्तनत काल के प्रमुख अधिकारी व मंत्री:-

मजलिस ए खलवत	मंत्रि परिषद
वजीर	सामान्य प्रमुख मंत्री व वित मंत्री
आरिज ए मुमालिक	**सैनय मंत्री/ प्रधन सेनापति**
मुस्तौफी	महालेखा परिक्षक
खजानी	कोषाध्यक्ष
दीवान ए वक्फ (जलालुदीन खिलजी द्वारा स्थापित)	धार्मिक सम्पति व कार्यो का मंत्री
दीवान ए अमीर कोही (मु0 तुगलक द्वारा स्थापित)	कृषि मंत्री
दीवान ए रियासत	विदेश मंत्री
दिवान ए ईशा	शाही पत्र व्यवहार का प्रमुख
सद्र उस सुदूर	धर्म विभाग का प्रमुख
दीवान ए रियासत(अलाउदीन खिलजी द्वारा स्थापित)	बाजार व्यवस्था का प्रमुख
दीवान ए मुस्तकराज(अलाउदीन खिलजी द्वारा स्थापित)	बकाया वसूली का प्रमुख
काजी उल कुजात	प्रधान न्यायाधीश
बरीद ए मुमालिक	गुप्तचर प्रमुख
वली या नाजिम	प्रान्तीय शासक
शिकदार	शिक या जिले का प्रमुख

सल्तनत काल के प्रमुख लेखक व पुस्तकें:-

लेखक	**पुस्तक**
हसन निजामी	ताजुल-मासिर
मिनहानु सिराज	तबकाते नासिरी
जियाउदीन बरनी	तारिख ए फिरोजशाही,फतवा ए जहांदारी
शम्स ए शिराज अफीफ	**तारीखें फिरोजशाही**
याहिया बिन अहमद सरहिन्दी	तारिखें मुबारकशाही(दक्खिनी)
अब्दूल मलिक इसामी	फतुह उस सलातीन
अमीर खुसरो	**खजाए उल फुतुह(तारिखे अलाई),तुगलकनामा, किरान उस सादेन, मिफता उल फुतुह, आशिका, नूह सिपिहर**
एन उल मुल्क मुलतानी	मुशनत ए महरू
अलबरूनी	किताबुल हिन्द
फिरोज तुगलक	फतुहाते फिरोजशाही (आत्मकथा)
सैफुदीन याज्दी	जफरनामा
इब्नबतुता	रेहला
चन्दबरदाई	पृथ्वीराज रासो
सांरगधर	हमीर रासो ,हमीर काव्य

जगनक	आल्ह खण्ड(परमार रासो)
जयदेव	**गीत गोविन्द, प्रसन्न राघव(संस्कृत)**
जयसिंह सूरी	हमीर मद मर्दन (संस्कृत)
मलिक मोहम्मद जायसी	पदमावत
कल्हण	राजतंरगिणी (संस्कृत में प्राचीन व पूर्व मध्यकालिन इतिहास का एक मात्र शुद्व व प्रमाणिक ग्रन्थ)
तबाकाते अकबरी	निजामुदीन अहमद

- **वतन जागीर का हस्तांतरण नहीं किया जा सकता**
- **सल्तनतकाल में भू राजस्व आय का प्रमुख स्त्रोत**

सूफी मत

- सूफी मत का उदय 10 वीं शताब्दी में अरब से हुआ था।
- सूफी मत में अल्लाह व व्यक्ति के बीच प्रेम संबधों पर बल दिया गया है।
- भारत में सूफी मत के संस्थापक ख्वाजा मोईनुदीन चिश्ती थे। जो मोहम्मद गौरी के अभियानों के दौरान भारत आये थे।
- सूफी मत में भक्ति संगीत की प्रधानता है।
- सुफी मत 12 सिलसिलों (सम्प्रदाय) में बंटा है भारत में दो सम्प्रदाय चिश्ती व सुहारवर्दी अधिक लोकप्रिय हुए।
- प्रमुख सूफी सिलसिले व उनके संस्थापक:-

चिश्तिया	ख्वाजा माईनुदीन चिश्ती
सुहारवर्दी	**बहाउदीन जकारिया**
कादिरी	अब्दूल कादिर जिलानी
नक्शबन्दी	ख्वाजा बहाउदीन नक्शबंद
फिरदौसी	शेख बदरूदीन समरकंदी
सतारी	शाह अब्दुल सतारी

- चिश्ती संत राजनीति व शासकों से दूर रहे परन्तु सुहारवर्दी संत शासकों से सेवा प्राप्त करते थे व धर्म विभाग में पद लेते थे।
- सिक्खों के आदि ग्रन्थ में सूफी सन्त बाबा फरीद के वचनों को स्थान दिया गया है।
- निजामुदीन औलिया ने योग व प्राणायाम को अपनाया था।
- **फवायद उल फुआद की विषय वस्तु हजरत निजामुदीन औलिया से संबधित है।**
- दक्षिण भारत में सूफी मत को हजरत गेसूदराज ने लोकप्रिय बनाया
- हजरत गेसूदराज चिराग ए दिल्ली के शिष्य थे।
- **शेख अहमद सरहिन्दी नक्शबन्दी सिलसिले के प्रमुख सन्त थे जिन्हे मुजहिद अर्थात इस्लाम का पुनरूद्वारक या सुधारक कहा जाता था**
- **मलफूजात सूफी सन्तों के कथनों का संग्रह है।**
- **शेख सलीम चिश्ति की दरगाह फतेहपुर सीकरी में है।**

भक्ति आन्दोलन

- भक्ति आन्दोलन की शुरूआत 9 वीं शताब्दी में वैदान्त व अदैत के महान प्रचारक आदि शंकराचार्य से मानी जाती है।**भक्ति आन्दोलन दक्षिण भारत में आलवार सन्तों ने प्रारम्भ किया इससे क्षेत्रिय भाषाओं की समृद्वि हुयी जो सबसे महत्वपूर्ण स्थायी परिणाम था।**
- **प्रेमवाटिका का रचनाकार रसखान था।**
- शंकराचार्य ने चार धर्मपीठों की स्थापना की जिनमे उतर में ब्रदीनाथ, दक्षिण में श्रगेंरी, पूर्व में जगन्नाथपुरी, पश्चिम में द्वारिका में है।
- शंकराचार्य ईश्वर और आत्मा के एकत्व अदैत के समर्थक थे।

मत	प्रवर्तक
अद्वैतवाद	आदिशंकराचार्य
विशिष्टाद्वैतवाद	रामानुजाचार्य
द्वैतवाद	माध्वाचार्य
द्वैताद्वैतवाद	निम्बार्काचार्य
शुद्धाद्वैतवाद(पुटि मार्ग)	वलभ्भाचार्य,विष्णुस्वामी

रामानन्द

- रामानन्द ने के प्रमुख शिष्यों में कबीर(जुलाहा), रैदास(चर्मकार), धन्ना (जाट), सेना(नाई), सधना(कसाई) व पीपा(राजपूत) प्रमुख थे।
- रामानन्द ने अपने उपदेशों का प्रचार प्रसार हिन्दी में किया

कबीर

- कबीर ने मूर्तिपूजा नमाज व आडम्बरों का विरोध किया
- कबीर के उपदेशों का संग्रह बीजक कहलाता है।
- उतर प्रदेश के मगहर नामक स्थान पर कबीर की समाधि है।

गुरूनाननक

- गुरूनाननक का जन्म पाकिस्तान के लाहौर में तलवंडी(ननकाना साहिब) में हुआ था।
- गुरू नानक ने मक्का मदीना की यात्रा भी की
- इनके शिष्यों में हिन्दू व मुसलमान दोनों थे।
- इन्होने निराकार ईश्वर की उपासना की जिसे अकाल पुरूष कहा

वल्लभाचार्य

- वल्लभाचार्य का जनम वाराणासी में हुआ था परन्तु यह तैलंगाना(आन्ध्र प्रदेश) के थे।
- इन्होने पुष्टि मार्ग की स्थापना की
- इन्होने कृष्ण जी के श्रीनाथ जी स्वरूप की उपासना की
- इनके आठ शिष्यों को अष्टछाप के नाम से जाना जाता है।
- वलभ्भाचार्य ने संस्कृत व बृज भाषा में पूर्व मीमांसा ग्रन्थ वश्री मद भागवत गीता टीका की रचना की

चैतन्य महाप्रभु

- बंगाल में गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय के प्रवर्तक थे।
- इनका जन्म बंगाल में नवदीप(नांदिया) नामक थान पर हुआ था।
- इनके बचपन का नाम निमाई तथा वास्तविक नाम विश्म्भर था।
- 22 वर्ष की आयु में सन्त ईश्वर पूरीसे दीक्षा प्राप्त की
- दीक्षा के बाद चैतन्य नाम हुआ
- उड़ीसा के शासक प्रतापरूद्र देव के संरक्षण में पूरी में बस गये।
- इन्होने कीर्तन व भक्ति में नृत्य को लोकप्रिय बनाया

सूरदास

- वल्लभाचार्य के आठ शिष्यों के समूह अष्टछाप के सदस्य थे।
- सूरदास भक्ति आन्दोलन की सगुण धारा के कृष्ण भक्त सन्त थे।
- इनके पिता रामदास अकबर के दरबार में कवि व गायक थे।
- जन्माधं होने के बावजुद कृष्ण लीलाओं का सजीव वर्णन अपनी रचनाओं में
- सूर सागर ,सूर सारावली, साहित्य लहरी इनकी रचनाएं है।

तुलसीदास

- भक्ति आन्दोलन की सगुण धारा के रामभक्त सन्त थे।
- उतर प्रदेश के राजापुर (बांदा) जिले में जनम
- कर्म क्षेत्र वाराणासी
- श्री रामचरितमानस बृज भाषा में रचना की

- विनय पत्रिका दोहावली कवितावली हनुमानबाहुक की रचना की
- **अकबर के समकालिन**

मीरा बाई

- मीरा बाई मेड़ता के राणा रत्न सिंह की पुत्री थी
- मेवाड़ के राणा सांगा के पुत्र भोजराज की पत्नी थी
- माधुर्य भाव से पति के रूप में श्री कृष्ण की उपासना की
- राजस्थानी व बृज भाषा में पदों की रचना

दादू दयाल

- जन्म अहमदाबाद में
- राजस्थान के नरैना या नारायण गांव में मुख्य केन्द्र यहीं पर मृत्यु हुयी **भक्ति आन्दोलन को राजस्थान में फेलाने वाले मुख्य सन्त**
- कबीर पन्थी थे
- धर्मग्रन्थों की सता में नहीं बल्कि आत्म ज्ञान और ईश्वर प्रेम में विश्वास करते थे।

रविदास या रैदास

- चर्मकार परिवार से
- इनके सन्देशों को सिक्खों के आदि ग्रन्थ में स्थान दिया गया है।

ज्ञानेश्वर

- महाराष्ट्र में भक्ति आन्दोलन के प्रणेता
- मराठी भाषा में गीता पर ज्ञानेश्वरी टीका लिखि जो विश्व की सर्वोतम रहस्यवादी ग्रन्थों में मानी जाती है।

नामदेव

- नामदेव का जन्म दर्जी परिवार में हुआ
- विठोबा(विष्णु) के भक्त थे।
- वरकरी सम्प्रदाय की स्थापना की
- भक्तिपरक मराठी गीतों का संग्रह अभंग कहलाता हैं

एकनाथ

- पैठण(औरगांबाद) में जनम हुआ
- व्यवहारीक व आध्यातमिक जीवन के साम्जंस्य का वर्णन किया
- वैराग्य के अतिरिक्त गृहस्थों के लिये भी भक्ति द्वारा मोक्ष का मार्ग बतलाया

तुकाराम

- **महाराष्ट्र के किसान परिवार में जन्में सन्त थे।**

समर्थ रामदास

- शिवाजी के आध्यातमिक गुरू थे।
- कृष्णा नदी के तट पर चफाल स्थान मुख्य केन्द्र था।
- दास बोध की रचना की

विजयनगर साम्राज्य

- विजय नगर हिन्दू साम्राज्य की स्थापना मुहम्मद बिन तुगलक के काल में 1336 ई0 मे हरिहर व बुक्का नामक दो भाईयों ने की**स्थापना का उददेश्य हिन्दू हितों की रक्षा करना**
- तुगंभद्रा नदी के तट पर स्थित विजयनगर (आधुनिक हम्पी) इस साम्राज्य की राजधानी था।
- **राजा व मन्त्रिपरिषद मे समस्त शक्तियां केन्द्रित थी।**
- इस पर संगम वंश, सलुव वंश, तुलुव वंश, अरविदु वंश के शासकों ने शासन किया
- संगम वंश के शासकों में हरिहर व बुक्का के पश्चात देवराय प्रथम व देवराय द्वितीय शासक बने
- तुलुव वंश के कृष्णदेव राय(1509-1529) व सदाशिव राय थे। कृष्णदेव राय की गिणती इतिहास के सर्वश्रेष्ठ शासकों में की जाती है। संस्कृत व तेलगु भाषा के विद्वान कृष्णदेवराय ने अमुक्त माल्यद नामक प्रशासनिक व राजनितिक विषय पर एक तैलगू ग्रनथ की रचना की इसने विठृठल स्वामी मन्दिर व हजारा मन्दिर का निमार्ण भी करवाया

- अरविदु वंश का प्रसिद्व शासक वेंकटराय द्वितीय था।
- वेदों के भाष्यकार विद्वान सायण व माधव का संबध विजयनगर साम्राज्य से था
- विजयनगर साम्राज्य का समकालिन दक्षिणी मुस्लिम राज्य बहमनी से सदैव संघर्ष बना रहा
- 1565 ई0 में तालिकोटा के युद्व में पराजित होने से विजयनगर साम्राज्य का वैभव नष्ट हो गया **तालिकोटा के युद्ध का मुख्य कारण विजयनगर की सेना का उग्र स्वभाव था तथा प्रशिक्षित सैनिकों व शस्त्रों की कमी पतन का मुख्य कारण था।**
- विजयनगर साम्राज्य में आये विदेशी यात्री:-

यात्री	शासनकाल
इटली का निकोलो कोन्टी	देवराय प्रथम
ईरान का अब्दूर्रज्जाक	देवराय द्वितीय
पुर्तगाल का डेमिगों पेईज	कृष्णदेव राय
पुर्तगाल का फर्नाओ नूनीज	रामराय

बंगाल राज्य

- संस्थापक इलियास शाह
- नसरत शाह (1518-33) ने महाभारत का हिन्दी अनुवाद करवाया
- नसरत शाह ने गौड़ में बड़ा सोना तथा कदम रसूल मस्जिदें बनवायी

असम राज्य

- **अहोम असम के शासक थे।**

गढ़ कंटगां राज्य

- **गढ़ कटंगा राज्य की स्थापना गोण्डों ने की।**

टौंक राज्य

- **स्थापना अमीर खां पिण्डारी ने की**

बीकानेर राज्य

- **अकबर के समय बीकानेर के वर्तमान किले का निमार्ण राय रायसिंह ने करवाया था।**
- **बीकानेर के राजा गंगासिंह ने चीन युद्व में अपनी उंट की टूकड़ी के साथ सकिय रूप से भाग लिया इसलिये चीन पदक प्रदान किया गया।**
- **चैम्बर आफ प्रिन्सेज के प्रथम चांसलर गंगासिंह थे।**

करौली राज्य

करौली सर्वप्रथम संधि के द्वारा बिट्रिश राजनायिक प्रभाव में आया

अलवर राज्य

- **अलवर के राजपूत राजा ने 1857 के विद्रोह में विद्रोहियों का साथ दिया तथा कैप्टन मेसन के अधीन बिट्रिश सेना को पराजित किया।**

जौनपुर राज्य

- संस्थापक मलिक सरवर उर्फ **ख्वाजा जंहा**
- मलिक सरवर को सुल्तान उस शर्क भी कहा जाता था
- **इब्राहीम शर्की ने अटाला मस्जिद बनवायी**
- जौनपुर को भारत का शिराज कहा जाता था

कश्मीर राज्य

- संस्थापक शम्सुदीन शाह
- जैनुल आबदीन (1420-70) ने हिन्दूओं से जजिया कर हटाया
- जैनुल आबदीन ने महाभारत व राज तरंगिणी का फारसी अनुवाद करवाया।
- राजतरंगिणी का फारसी नाम बहर उल अस्मार था।
- रम्जानामा महाभारत का फारसी अनुवाद था।
- **मध्यकालिन इतिहास के फारसी स्त्रोत दरबार की घटनाओं के बारे में थे।**
- **मध्यकालिन भारत में फारसी दफतरी भाषा थी इसकी शिक्षा** हिन्दू व मुसलमान दोनों को दी जाती थी

- **कश्मीर में ऋषि आन्दोलन का संस्थापक शेख नूर उद दीन था।**
- जैनुल आबदीन को कश्मीर का अकबर कहते है।

गुजरात राज्य

- संस्थापक जफर खां
- अहमद शाह (1411-42) ई0 ने अहमदाबाद नगर बसाया
- महमूद बेगढ़ा (1458-1511 ई) सर्वश्रेष्ठ शासक था

मालवा राज्य

- संस्थापक दिलावर खां
- हुसंग शाह ने माण्डू को राजधानी बनाया
- हुसंग शाह का मकबरा पूर्णत: संगमरमर से बनी भारत की प्रथम इमारत है।
- **मालवा के शासक बाज बहादुर के विरूद्व अकबर के धाय भाई अधम खान के नेतृत्व मे आक्रमण किया गया।**
- **मालव काल गणना विक्रम संवत से अभिन्न हैं।**

उड़ीसा राज्य

- संस्थापक अन्नत बर्मन चोलगंग
- पुरी में जगन्नाथ मदिंर का निमार्ण कराया

मेवाड़ राज्य

- संस्थापक गुहिल
- **राणा कुम्भा ने मालवा को जीतकर चितौड़ में कीर्ति स्तम्भ बनवाया**
- कीर्ति स्तम्भ को हिन्दू देवशास्त्र का चित्रित कोश कहा गया है।

मारवाड़ राज्य

- संस्थापक राव चूड़ा
- राव जोधा (1438-88) ने जोधपुर की स्थापना
- मालदेव (1532-62 ई) का शेरशाह से संघर्ष
- **अजीत सिंह महाराजा जसवन्त सिंह का पुत्र था।**

बहमनी राज्य

- मुहम्मद बिन तुगलक से असतुंष्ट अमीरों के गुट ने स्थापना की
- हसन गंगु संस्थापक था जो 1347 में अलाउदीन बहमन शाह के नाम से राजा बना
- बहमनी राज्य की राजधानी गुलबर्गा थी
- 1417 में रूसी यात्री निकीतिन ने बहमनी राज्य की यात्रा की
- फिरोजशाह बहमनी विद्वान व प्रसिद्व राजा था
- गोलकुण्डा में हीरे की खान व रायपुर दोआब का उपजाउ क्षेत्र बहमनी राज्य में थे। जिसके कारण इसका विजयनगर साम्राजय से युद्व होता रहा
- महमूद शाह बहमनी के काल में 1482 से 1518 ई0 में बहमनी राज्य पांच भागों में बंट गया
- **बहमनी राज्य के पतन से दक्षिण में 6 राज्यों का उदय हुआ**

मुगल साम्राल्य

बाबर(1526 से 1530)

- बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध में दिल्ली के अतिंम सुल्तान इब्राहिम लोदी कों पराजित कर मुगल साम्राज्य की नीवं रखी
- मुगल साम्राजय भारत में 300 वर्ष से अधिक रहा इसमें से 182 वर्ष का समय मुगलों के वैभव का काल था
- बाबर फरगना का शासक था जिसने अफगानिस्तान व उतर पश्चिमी भारत को जीता था
- **बाबर ने सैनिक संगठन में श्रेणि प्रणाली का चलन किया जिसमें सबसे छोटी टूकड़ी में पचास सैनिक होते थे।**
- बाबर पिता की ओर से तैमूर का पांचवा वंशज तथा माता की ओर से चंगेज खां का चौहदवां वशंज था

- 1527 में मेवाड़ के राणा सांगा को पराजित किया **राणा सांगा ने बिना साम्राज्य स्थापित किये शासकों के परिसंघ का नेतृत्व किया।**
- 1528 में चन्देरी के युद्ध में मेदनी राय को पराजित किया
- 1529 में घाघरा के युद्ध में अफगानों को पराजित किया
- पानीपत में मस्जिद बनवायी।
- **तख्त ए ताउस बेबादल खां की देखरेख में बना**
- 1530 में बाबर की मृत्यू हो गयी
- बाबर ने अपनी आत्मकथ तुजुक ए बाबरी तुर्की भाषा में लिखि है।**जिसका फारसी में अनुवाद अब्दुलरहीम खानाखाना ने किया**

हुमांयु (1530-1540ई0 व 1555 से 56 ई0)

- बाबर की मृत्यु के पश्चात उसका पुत्र हुमांयु गदृदी पर बैठा
- **जिस समय हुमांयु गद्दी पर बैठा काबुल व कन्धार पर उसके छोटे भई कामरान का अधिकार था।**
- हुमांयु का पूरा जीवन संघर्षो में उलझा रहा
- **1535 से 36 ई0 में हुमांयु गुजरात के शासक बहादुरशाह को हराकर गुजरात में सफलता पाने वाला प्रथम मुस्लिम सुल्तान बना**
- 1539 में चौसा के युद्ध तथा 1540 में बिलग्राम के युद्ध में शेरशाह सूरी या शेर खां ने हुमांयु को पराजित कर दिया और दिल्ली व आगरा पर अधिकार कर लिया जिससे हुमांयु भाग कर सिन्ध में अमरकोट, फारस आदि में निर्वासित जीवन व्यतित करने लगा
- **1544 में इरान के शासक तहमास्प ने हुमांयु को शरण दी**
- 1555 में मच्छीवारा व सरहिन्द के युद्ध में विजय प्राप्त कर हुमांयु ने शेरशाह के वंशजों से भारत का साम्राज्य वापस छिन लिया
- 1556 ई0 मेंअपने पुस्तकालय शेरमण्डल की सीढ़ियों से गिरकर हुमांयु की मृत्यु हो गयी। हुमांयु का उतराधिकारी उसका पुत्र अकबर हुआ
- **हुमांयु के मकबरे में चार बाग व्यवस्था का सर्वप्रथम प्रयोग मिलता है।**
- हुमांयुनामा की लेखक गुलबदन बेगम थी
- **किवदंतियों के अनुसार रानी कर्णावती ने हुमांयु को राखि भेजी थी**

शेरशाह सूरी (1540-1545)

- शेरशाह कुशल प्रशासक व सेनानायक था
- शेरशाह ने 1540 में कन्नौज को जीता
- 1542 में मालवा को जीता
- 1543 में रायसीन को जीता
- 1544 में मारवाड़ व मेवाड़ को कड़े मुकाबले में जीता
- 1545 में कालिंजर को जीता **कालिजंर अभियान के दौरान ही एक बारूद के विस्फोट में शेरशाह की मृत्यु हो गयी**
- शासन प्रबंध के क्षेत्र में शेरशाह अकबर का पूर्वगामी था
- उसने साम्राज्य का प्रशासनिक विभाजन इक्ता या सूबों में किया
- गांव स्वायतशासी ईकाई थे जहां पटवारी संरपंच और चौकीदार होते थे।
- शेरशाह ने भूमि की उचित पैमाईश करवा कर लगान की वसूली की जहां पैमाईश संभव नहीं थी वहां पर गल्ला बख्शी ,बटाई, नश्क या कनकूत, नकदी या जब्ती नामक परम्परागत प्रणालियां ही चलाई गई
- **मपाई व उसके आधार पर कर निर्धारण की प्रणाली जब्ती प्रथा कहलाती थी।**
- किसानों से लगान के अतिरिक्त जरीबाना व महसिलाना नामक कर भी वसूल किये जाते थे।
- शेरशाह ने तांबे सोने व चांदी के सिक्के चलाए उसके द्वारा चलाया गया चांदी का रूपया ही बाद में मुगल व बिट्रीश मुद्रा प्रणाली का आधार बना
- शेरशाह ने ग्रडं ट्रंक रोड़ बनवायी जो बंगाल के सोनार गांव से आगरा व दिल्ली होते हुये लाहौर तक जाती थी

- रोहतास का किला, सहसाराम में शेरशाह का मकबरा, दिल्ली के पुराने किले में किला ए कुहना मस्जिद शेरशाह ने बनवायी थी
- शेरशाह के उतराधिकारी इस्लामशाह, फिरोजशाह, मोहम्मद आदिल शाह थे।
- **गोल गुम्बज के नाम से मशहुर मो0 आदिलशाह का मकबरा बीजापुर में है।**
- अब्बास शेरवानी ने तारिख ए शेरशाही लिखि
- **चांदी के रूपये में ताबें के 64 दाम आते थे।**

अकबर (1556-1605ई0)

- अकबर का जन्म 15 अक्टूबर 1542 ई0 को **अमरकोट के राणा वीरसाल के दुर्ग में हुआ था**
- हुमांयु की मृत्यु के समय अकबर पंजाब अभियान पर था
- पंजाब में कालानोर नामक स्थान पर अकबर का राज्याभिषेक
- बैराम खां अकबर का सरंक्षक बना
- **1560 ई0 में मक्का जाते समय अहमदाबाद में पाटन के पास एक अफगान ने बैराम खां की हत्या कर दी**
- **जब अकबर पंजाब में था तब मो0 आदिलशाह का प्रधानमंत्री व सेनानायक हेमूं दिल्ली व आगरा पर अधिकार करके विक्रमादित्य के नाम से शासक बना**
- 1556 में पानीपत के द्वितीय युद्ध में हेमूं अकबर से पराजित हुआ
- अकबर बचपन में बैराम खां व हरम दल के प्रभाव में रहा हरम दल में अकबर की मां व धाय मां माहम अनगा शामिल थी 1562 में अकबर ने हरम दल से भी मुक्ति पा ली।
- 1562 में गुलाम बनाने की प्रथा समाप्त
- 1563 में तीर्थयात्राा कर समाप्त
- 1564 में जजिया कर समाप्त
- **1567 में मेवाड़ का महाराणा उदय सिंह था** जिसके काल में अकबर ने चितौड़ पर आक्रमण किया
- 1571 में फतेहपुर सीकरी की स्थापना आगरा से 35 किमी दूर शेख सलीम चिश्ती की दरगाह के पास की जहां विश्व का सबसे उंचा द्वार बुलन्द दरवाजा है।जिसका निमार्ण 1602 में करवाया
- **1575 में फतेहपुर सीकरी में इबादत खाना बनवाया इबादत खाना में होने वाली चर्चा ने अद्वैतवाद के प्रचार में सहायता दी।**
- **फतेहपुर सीकरी के निमार्ण अकबर की स्थापत्य कला की महत्वपूर्ण उपलब्धि थे।**
- 1576 में अकबर के सेनापति मानसिंह व मेवाड़ के महाराणा प्रताप के बीच हल्दीघाटी का युद्ध हुआ जिसमें जीतकर भी अकबर मेवाड़ पर अधिकार नहीं कर सका
- मजहर (धार्मिक अधिकार) की घोषणा 1579 में की
- 1582 में अकबर ने एक नया धर्म दीन ए ईलाही चलाया
- 1583 से इलाही संवत शुरू किया
- राजस्थान में आमेर के कछवाहा शासका ने 1562 में अकबर से विवाह संधि कर उसकी अधिनता स्वीकार की
- 1570 में मारवाड़ बीकानेर व जैसलमेर ने अधीनता स्वीकार की
- अकबर ने गोडंवाना रानी दुर्गावती को हराकर जीता
- 1601 में अकबर ने दक्षिण में अहमदनगर व खानदेश को जीतकर अपने विजय अभियान को विराम दिया
- **चांदबीबी ने मुगलों से अहमदनगर दुर्ग की रक्षा की**
- 25 अक्टूबर 1605 को अकबर की मृत्यू
- अकबर का साम्राज्य 15 सूबों में बंटा था
- अबुल फजल ने अकबरनामा व आईना ए अकबरी लिखि
- **भू राजस्व प्रणाली में अकबर शेरशाह के पद चिन्हों पर चला**
- **अकबर ने दहसाला भू राजस्व प्रणाली प्रारंभ की।**
- **अकबर ने शादी के लिये लड़कियों की आयु 14 वर्ष निर्धारित की।**
- **अकबर के मकबरे में मीनारों का सर्वप्रथम प्रयोग मिलता है।**

- **अंडाकार गुम्बद अकबर के काल की स्थापत्य कला का विशिष्ट लक्षण है।**
- **अकबर के समय कश्मीर मात्र एक जिला था।**
- **जैनाचार्य हीरविजय सूरि 2 वर्ष तक मुगल दरबार में रहा तथा जगद्गुरू की उपाधि से सम्मानित किया गया।**
- **अकबर द्वारा प्रारंभ मनसबदारी में जात सैनिकों की संख्या है।**
- **राजपूत मनसबदारों से एक चौथाई आय काट ली जाती थी।**
- **अकबर के नवरत्न:-**
    1. अबुल फजल :- फारसी विद्वान व सेनानायक
    2. फैजी:- फारसी विद्वान व कवि
    3. बीरबल:- हाजिर जबाब व चतुर मंत्री
    4. तानसेन दरबारी गायक व संगीतज्ञ
    5. टोडरमल:- भू राजस्व सूधारक
    6. मानसिंह:- सेनापति
    7. अब्दूर्रहीम खानखाना:- हिन्दी कवि व सेनानायक
    8. हमीम हुमाम:- शाही पाठशाला का प्रधान
    9. मुल्ला दो प्याजा:- चतूर व वाकपटू दरबारी

जंहागीर (1605 से 1627 ई0)

- जहांगीर का जन्म शेख सलीम चिश्ती की खानकाह में होने के कारण बचपन का नाम सलीम
- सलीम की शिक्षा अब्दूर्रहीम खानखाना के संरक्षण में हुयी थी
- सलीम ने अपने पिता अकबर के विरूद्व विद्रोह 1599-1604 ई0 में किया था
- 1602 में जहांगीर ने अपने मित्र ओरछा के वीर सिंह बुन्देला से अकबर के सलाहकार अबुल फजल की हत्या करवा दी थी
- **1606 में जहांगीर के पुत्र खुसरो ने जहांगीर के विरूद्व विद्रोह कर दिया था जिसे शरण देने के कारण ही जहांगीर ने सिक्ख गुरू अर्जुन देव की हत्या करवा दी थी**
- **गुरू अजुर्न देव ने स्वर्ण मंदिर का निमार्ण करवाया (गुरू रामदास ने अमृतसर के तालाब का निमार्ण प्रारंभ करवाया था)**
- 1614 में मेवाड़ के राणा अमर सिंह से सन्धि की
- 1616 में अब्दूर्रहीम खानखाना के नेतृत्व में बीजापुर व गोलकुण्डा पर विजय
- जहांगीर के जीवन के अतिंम 14 वर्ष में उसकी पत्नी नूरजंहा सता का केन्द्र रही
- **जहांगीर चित्रकला का प्रेमी व पारखी था** उसके दरबार में कई हिन्दू व मुस्लिम चित्रकार रहते थे
- **अब्बुल हसन ने जहांगीर नामा के मुख्य पृष्ठ को चित्रित किया**
- **बिशनदास जहांगीर के दूत खान आलम के साथ पर्शिया गया था**
- **मंसूर पशु पक्षियों के चित्रण का पारखी था**
- **बसावन को चित्रकला में निर्देश के लिये ख्वाजा अब्दुल समद को सौंपा गया।**
- आगरा में जहांगीर ने नूरजंहा के पिता ग्यासबेग एतमाद्उलदोला का मकबरा बनवाया जो उसके काल की प्रसिद्ध इमारत है।(**पित्रादोला कला का सर्वप्रथम प्रयोग**)
- **तुजुक ए जहांगीरी आत्मकथा लिखि**
- **इकबालनामा ए जहांगीरी का लेखक मुस्ताद खां**
- **जहांगीर ने "दो आस्पा" व "सिंह आस्पा" पद लागु किये।**
- नवंबर 1627 में लाहौर में मृत्यू

शाहंजहां

- जहांगीर के पुत्र शाहंजंहा के बचपन का नाम खुर्रम था।
- शाहंजहां के समय पुर्तगालियों से मुगलों का संघर्ष हुआ
- 1628-29 में बुन्देलखण्ड के राजा झुझार सिंह का विद्रोह हुआ
- 1628-31 में खानेजहां लोदी ने विद्रोह किया था

- कई युद्धों व संधियों के पश्चात गोलकुण्डा, बीजापुर, व अहमदनगर मुगलों के अधिकार में आ गये परन्तु कंधार उनके हाथ से निकल गया
- शाहजंहा के काल को मुगल काल का स्वर्ण युग कहा जाता है क्यों कि इस काल में कला स्थापत्य व वैभव अपने उच्चतम स्तर पर था।
- शाहंजहा ने दिल्ली का लाल किला, **जामा मस्जिद**, **आगरा की मोती मस्जिद** व मुमताज महल की याद में ताजमहल बनवाया
- शाहंजहा ने उपने जीवन के अतिंम दिन आगरा के किले में बन्दी के रूप में गुजारे
- मकबरा आगरा के ताजमहल में ही है।

औरंगजेब (1658-1707)

- शाहजहां अपने बड़े पुत्र दाराशिकोह को बादशाह बनाना चाहता था परन्तु औरंगजेब जो दक्षिण का सूबेदार था उसने धरमत व सामूगढ़ में दाराशिकोह को हराया **दाराशिकोह ने काशि के विद्वानों की सहायता से उपनिषदों का हिन्दी अनुवाद करवाया जो सिर्र ए अकबर कहलाता है।**
- उसने अपने अन्य भाईयों शूजा व मुराद को भी हरा दिया
- औरंगजेब के काल में जाट विद्रोह 1668 से 1689 तक क्रमशः गोकूल, राजाराम व चूरामन के नेतृत्व में हुए
- 1675 में गुरू तेगबहादूर की हत्या करवा दी
- 1679 में हिन्दूओं पर पुनः जजिया कर लगवा दिया
- **औरंगजेब की धार्मिक रूढ़ीवादिता उसकी राजपूतों के प्रति नीति परिवर्तन का मुख्य कारण थी।**
- हिन्दूओं के मंदिरों को तुड़वाया, पुराने मंदिरों की मरम्मत व नये मंदिरों के निमार्ण पर प्रतिबंध लगा दिया
- 1707 में औरंगाबाद में मृत्यू औरगजेब का मकबरा दौलताबाद (औरंगाबाद) में है।
- औरंगजेब की नीतियों को मुगल साम्राज्य के पतन के लिये उतरदायी **औरगंजेब की नीतियों का परिणाम रिक्त कोष था।**
- **औरंगजेब ने लगभग 50 वर्ष तक शासन किया।**
- **गुरू गोविन्द सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की।**
- **गुरू गोविन्द सिंह की मृत्यू के बाद पंजाब में बंदा बहादुर ने सिखों का नेतृत्व किया।**

बहादुर शाह प्रथम (1707-12)

- **जाजु का युद्ध मुअज्जम और आजम के बीच हुआ**

जहांदारशाह (1712-13)

फर्रूखशियर (1713-19)

रफी उर दरजात (1719 ई0)

शाहंजहां द्वितीय या रफीउद्दौला (1719)

मुहम्मद शाह रंगीला (1719-48)

- मुहमम्द शाह के काल में सैयद बन्धु सम्राट निर्माता बन गये थे
- **1739 में नादिरशाह ने दिल्ली पर हमला कर दिया**
- **नादिरशाह ने भारत पर आक्रमण उसके प्रतिनिधियों के साथ निर्दयतापूर्वक व्यवहार करने पर किया**

अहमदशाह(1748-54)

आलमगीर द्वितीय (1754-59)

शाह आलम द्वितीय(1759-1806)

अकबर द्वितीय(1806-37)

बहादुर शाह द्वितीय(1837-57)

- बहादुर शाह जफर या द्वितीय को अंग्रेजों ने बन्दी बनाकर कैद कर लिया तथा रंगून (म्यांमार) भेज दिया जहां उसकी 1862 ई0 में मृत्यू हो गयी
- बहादुर शाह जफर का मकबरा रंगून (म्यांमार) में है।

मुगल काल में भूमि के प्रकार

1. **पोलजः- सर्वाधिक उपजाउ भूमि जिस पर हर वर्ष खेती होती थी**
2. **परतीः-** पोलज से कुछ कम उपजाउ भूमि जो एक फसल के गाद एक वर्ष के लिये खाली रखी जाती थी

3. चाचर:- एक फसल के बाद दो या तीन वर्ष के लिये खाली छोड़ी जाने वाली भूमि

4. बंजर:- अनुपयोगी भूमि

मुगल काल के मंत्री व अधिकारी

मनसबदार	उच्च सैनिक अधिकारी
वकील ए मुतलक	प्रधानमंत्री (जहांगीर के काल)
दीवान ए वजीर	वित मंत्री तथा प्रधानमंत्री (शाहंजहां काल)
मीर बख्शी	सैन्य मंत्री(**भू राजस्व अधिकारियों का निरीक्षणकर्ता**)
सद्र उस सदर	धार्मिक मामलों का मंत्री
मीर शामा	शाही महल और कारखानों का मंत्री
सदर काजी	प्रधान न्यायाधीश
मुहतसिब	औरंगजेब द्वारा नियुक्त नैतिक व्यवस्था का अधिकारी
सूबेदार	प्रान्त प्रमुख
वाकिया नवीस	गुप्तचर प्रमुख
मीर बहर	चुंगी अधिकारी
फौजदार	**जिले का प्रमुख**
अमलगुजार	मालगुजारी अधिकारी
बिक्तची	अमलगुजार का सहायक लेखक
शिकदार	परगनाधिकारी
आमिल	परगने में कर एकत्र करने वाला
फोतदार	परगने का खंजाची
कारकून	लिपिक

मुगल प्रशासन का आधार सैनिक था

जजिया का अर्थ विभेद है।

प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी

कन्धार इस काल में भारत व फारस के मध्य संघर्ष का प्रमुख कारण था

- **मुगलकाल साहित्य:-**

साहित्य	लेखक
मुतंखाब उत तवारिख	अब्दूल कादिर बंदायूनी
तबकात ए अकबरी	निजामुदीन अहमद
तारिख ए फरिश्ता	हिन्दू बेग फरिश्ता
तारिख ए सलातीन ए अफगाान	अकमद यादगार
इकबालनामा	मोतमिद खान
पादशाहनामा (शाहजंहा का काल)	अब्दूल हमीद लाहौरी
तारिख ए अल्फी	मुल्ला दाउद
मुतखाब उल लबाब	खफी खां
फतवा ए आलमगीरी	ईश्वरदास
नुस्खा ए दिलखुश	भीमसेन
सुन्दर श्रंगार	सुन्दर कविराय
बिहारी सतसई	बिहारी
कविप्रिया अलंकार मंजरी	केशवदास
कवित्व रत्नाकर	सेनापति
कविन्द्र कल्पतरू	कविन्द्र
गंगा लहरी	पं0 जगन्नाथ

मराठा शक्ति

- शिवाजी का जन्म 1627 में शिवनेर के दुर्ग में हुआ
- पिता शाह जी भोंसले बीजनोर के सेनानायक थे
- माता का नाम जीजा बाई था
- शिक्षा व प्रशिक्षण दादाजी कोणदेव के संरक्षण में हुआ
- आध्यातमिक गुरू समर्थ रामदास थे
- **शिवाजी ने सर्वप्रथम 1642 में सिंहगढ़ का दुर्ग बीजापुर से जीतकर अपने विजय अभियान की शुरूआत की**
- मुगलों से शिवाजी का प्रथम संघर्ष 1657 में हुआ
- **बीजापुर के सेनापति अफजल खां ने शिवाजी को धोखे से मारना चाहा परनतु शिवाजी ने उसे ही मार दिया**
- शिवाजी का अन्त करने के लिये औरंगजेब ने शाईस्ता खां को दक्षिण की कमान सौंपी
- शिवाजी ने शाईसता खां पर रात में अचानक हमला करके घायल कर वापस भगा दिया
- **1665 में औरंगजेब के सेनापति राजा जयसिंह ने शिवाजी को पराजित किया और पुरन्दर की संधि की**
- **सवाई जयसिंह ने रेग्यूलर प्लान के अनुसार जयपुर की स्थापना की**
- पुरन्दर की संधि के बाद शिवाजी औरंगजेब से मिलने आगरा गए जहां औरंगजेब ने उन्हे कैद कर लिया परन्तु वे भाग निकले
- हिन्दू पद पादशाही शिवाजी का आर्दश था
- रांलिसन के अनुसार शिवाजी युद्व में बंदी बनाये गये सैनिक अफसरों को युद्व के बाद मुक्त कर देता था।
- शिवाजी का राज्याभिषेक 1674 में रायगढ़ के किले में हुआ तथा छत्रपति की उपाधि धारण की
- 1680 में शिवाजी की मृत्यू
- शिवाजी के बाद मराठों की कमान उनके बड़े पुत्र शम्भू जी ने संभाली जो 1688 में मुगलों से पराजित होकर मारा गया
- उसके बाद शिवाजी का दूसरा पुत्र राजाराम 1689-1700 शासक बना
- **राजाराम के बाद उसकी पत्नी ताराबाई 1700-1707 ई0 शासक बनी**
- ताराबाई के बाद शम्भू का पुत्र साहू 1707-1740 शासक बना
- साहू अयोग्य शासक था जिससे सारी शक्ति मंत्रिपरिषद के प्रमुख पेशुआ के पास आ गयी
- पेशवा का पद साहू के काल में वंशानुगत हो गया
- बालीजी विश्वनाथ 1714-20 तक पेशुआ थे इन्होने मुगलों से दक्षिण में कर वसूी का अधिकार प्राप्त किया तथा तत्कालिन मुगल सम्राटों को बनाने हटाने में भूमिका निभायी **पेशवा राज्य का संस्थापक बाालाजी विश्वनाथ को माना जाता है।**
- बाजीराव प्रथम 1720-40 तक पेशुआ रहा इसने गुजरात हैदराबाद के निजाम व कुछ मुगल क्षेत्रों को जीता
- बाली जी बाजीराव 1740-61 के काल में मराठा शक्ति चरम सीमा पर थी
- बालीजी बाजीराव ने मराठा राजधानी सतारा से हटाकर पूना में बनाली
- **1761 में मराठा सरदार सदाशिव राव भाउ और अहमदशाह अब्दाली के बीच पानीपत के तृतीय युद्व से हार के बाद मराठा शक्ति का पतन हो गया**
- **अहमदशाह अब्दाली का सातवां आक्रमण सिक्खों के विरूद्व था।**
- **सालबाई की संधि अग्रेंजों व मराठों के मध्य हुयी।**
- **बस्सेन की संधि से मराठे अपनी स्वतन्त्रता से वंचित हो गये।**
- मराठा प्रशासन में मंत्रिपरिषद को अष्टप्रधान कहते थे
- अष्ट प्रधान में आठ मंत्रि थे:-
  1. पेशवा प्रधानमंत्री था
  2. **अमात्य वित मंत्री था**
  3. वाकिया नवीस गृह मत्री था
  4. दबीर या सुमन्त विदेश मन्त्री था
  5. श्रुनविस या सचिव शाही पत्राचार प्रभारी था
  6. सर ए नौबत सेनापति था

7. पण्डित राव धार्मिक मामलों का मंत्रि था
8. न्यायाधीश न्याय प्रमुख था

- शिवाजी विजित राज्यों से चौथ (1/4 दर) व अपने राज्य के जमींदारों से सरदेशमुखी (1/10 दर) से कर वसूल करते थे।
- मराठा राज्य प्रान्तों तर्फो व मौजों में बंटा था
- महाराज साहू ने रघू जी भोंसले को बरार में कर वसूली के लिये नियुक्त किया
- पेशवा ओर मराठा सरदारों को मिला कर मराठा संघ(**कोन्फेडरेसी**) बना इस संघ में पूना में **पेशवा**, बड़ौदा में **गायकवाड़**, इन्दौर में **होल्कर**, ग्वालियर में **सिन्धिया** और नागपूर में **भोंसले** आते थे।(**5 प्रमुख सदस्य थे**)
- **डी बोने महाद जी सिन्धिया का आर्मी अध्यक्ष था।**
- अहिल्याबाई होल्कर ने इन्दौर में 1766 से 1796 तक प्रशासनिक कार्य सफलतापूर्वक संभाला

भारत में पूर्तगालियों का आगमन

- भारत में पुर्तगाल के अभियान की शुरूआत 1497 में पूर्तगाल के राजा एम्मानवेल के सरंक्षण में हुयी
- 17 मई 1458 को वास्को डी गामा केप आफ होपवड को पार करके कालिकट बंदरगाह पर पहुंचा
- **कालिकट के राजा जमोरिन ने उसका स्वागत किया**
- 1501 में वास्को डी गामा पुनः भारत आया
- पुर्तगालियों ने कालीकट कोचीन व कन्नोर में वयापारिक केनद्र बनाये
- उन्होने कालीकट कोठी की किलेबंदी की
- **पुर्तगाल आधिपत्य के प्रदेशों का पहला वायसराय डी अलमोडा 1505 ई0 था**
- डी अल्मोडा का ध्यान समुद्री शक्ति के विकास में ज्यादा था
- अल्बकुर्क (1509-1515ई0) नामक पुर्तगाली गर्वनर ने 1510 में गोवा पर कब्जा कर लिया जो पुर्तगाल के कब्जे से 1962 में मुक्त करवाया जा सका
- अल्बकुर्क ने होर्मुज नामक द्विप को जीता
- अल्बकुर्क ने कोचीन में एक दुर्ग बनवाया
- **अल्बकुर्क सती प्रथा का विरोध करने वाला पहला व्यक्ति था।**
- **अरब व्यापारी पुर्तगालियों के विरोधी थे।**
- पुर्तगालियों ने 1534 में द्वीव व 1538 में दमन को जीता
- पुर्तगाल के स्पेन के अधिकार में जाने से पुर्तगालियों की नौ सेना कमजोर हो गयी तथा भारत पर भी उनका वर्चसव कम पड़ गया

डच

- डच इस्ट इण्डिया कंपनी की स्थापना 1602 में हुयी**जिसका उददेश्य व्यापार विस्तार था।**
- डचों की पहली कोठी मसूलीपटट्नम 1605 ई0 में स्थापित हुयी
- डचों की अन्य कोठियां पुलीकट सूरत कासिम बजार आगरा पटना कारिकाल चिनसूरा नागपटटनम बालासोर व कोचीन में थी।
- डच अपनी आगरा कोठी में शराब बनाते थे।
- 1805 में अग्रेंजो ने डचों को चिनसूरा व मलक्का के बदले सुमात्रा द्विप देकर ाारत पर उनका प्रभाव लगभग समापत कर दिया

अग्रेंज

- इस्ट इंडिया कंपनी ने 31 दिसम्बर 1600 को महारानी एलिजाबेथ से ाारतीय व्यापार की आज्ञज्ञ प्राप्त की
- अग्रेंजों का प्रथम जहाज हैक्टर 1608 ई0 में कैप्टन हॉकिन्स के नेतृत्व में सूरत पहुंचा
- **कैपटन हॉकिन्स जेम्स प्रथम का दूत बनकर जंहागीर के दरबार में पहुंचा**
- कैप्टन हॉकिन्स को आज्ञा मिल गयी व **400 का मनसब** दिया परन्तु पुर्तगालियों के दबाब से आज्ञा वापस ले ली गयी

- 1612 में अग्रेंजों ने गुजरात के सूबेदार से सूरत में कोठी बनाने की आज्ञा प्राप्त करली तथा सूबेदार के अनुरोध पर **6 फरवरी 1613 में जहांगीर से भी सूरत में कोठी बनाने, खम्बात की खाड़ी में व्यापार करने तथा जहांगीर के दरबार में एलची रखने की आज्ञा मिल गयी**
- सर टामस रो 1615 मेंजहांगीर के दरबार में प्रथम एलची थे।
- अग्रेंजों ने दूसरी कोठी 1651 में हुगली में तथा तीसरी कोठी 1661 में मसूलीपट्टनम में खोली
- 1634 में शाहंजहां ने पूर्तगालियों को बंगाल से निकाल कर अग्रेंजों को बंगाल में वयापार की अनुमति दे दी
- 1639 में ,फासिंस ड्रेक ने चनदगिरी के राजा से कुछ भूमि खरीदकर मद्रास में बन्दरगाह बनाया तथा 1640 में फोर्ट सेण्ट जार्ज की स्थापना की
- 1640 में शांहजंहा की पुत्री जलने से उसे अग्रेंज डाक्टरों के शीतल लेपों से आराम होने पर शाहंजहां ने अग्रेंजों को बंगाल में स्वतन्त्र व्यापार की अनुमति दे दी और चुंगी माफ कर दी
- 1651 में अग्रेंजों ने हुगली और कासिम बाजार में कोठियां बना ली
- 1661 में चार्ल्स द्वितीय का विवाह पुर्तगाल की राजकुमारी से हुआ पुर्तगाल के शासक ने चार्ल्स द्वितीय को बम्बई का बनदरगाह दहेज में दे दिया जिसे चार्ल्स द्वितीय ने 10 पौण्ड वार्षिक किराये पर बम्बई ईस्ट इण्डिया कंपनी को दे दिया।
- औरंगजेब अग्रेंजों की ठगी व धोखाधड़ी से क्षुब्द हो गया तथा शाईस्ता खां की सेना ने अग्रेंजों को बंगाल से निकाल दिया औरंगजेब ने सूरत मछलीपट्टनम व विशाखापटटनम की कोठियां छिन ली तथा बमबई का किला घेर लिया
- अग्रेंजों ने औरगंजेब के पैरों पर गिर कर क्षमा मांग ली तथा 1690 में नई कोठियां बनाने की आज्ञा भी ले ली
- अजीमुशान ने 1698 में अग्रेंजों को तीन गांव सुतानौती गोविन्दपुर और कालीघाटा जागीर में दे दिये जहां पर अग्रेंज अधिकारी जॉब चारनोक ने 1698 में फोर्ट विलियम नामक किजला बनवाया जो कलकता के नाम से प्रसिद्व हुआ
- 1717 में फर्रूखसियर ने अगेंजों को चुगीं मुक्त व्यापार की आज्ञा प्रदान की
- सब्सिडियरी एलाइनस सिस्टम के तहत संधिबध राज्य को बिट्रिश फौज की स्थायी नियुक्ति करनी पड़ती थी व उसके रखरखाव के लिये निश्चित राशि का भुगतान करना पड़ता था।

फ्रासिंसी

- फ्रैन्च इस्ट इण्डिया कंपनी (कंपनी द इन्द ओरियंटल) की स्थापना 1642 में फ्रान्स के सम्राट लुई चौदहवें के मंत्री कोलबर्ट ने की।
- भारत में प्रथम फ्रांसीसी कोठी 1668 में सूरत में हुयी।
- दूसरी फ्रसिंसी कोठी मसूलीपट्टनम में 1668 में स्थापित हुयी।
- 1674 में फ्रैन्को मार्टिन ने पाण्डिचेरी बन्दरगाह का निमार्ण किया
- **1674 में ही बंगाल के नबाब शाईसता खां से जमीन प्राप्त कर चन्द्रनगर की कोठी बनवायी।**
- 1735-42 में फ्रांसिसी गवर्नर ड्यूमा ने कारीकल और माहे पर अधिकार कर लिया तथा कर्नाटक के नबाब दोस्त अली की आज्ञा लेकर कम्पनी के सिक्के भी ढलवाये।
- ड्यूमा को सम्राट मुहम्मदशाह ने मनसब प्रदान कर नबाब की उपाधि प्रदान की
- डूप्ले (1742-54) सबसे योग्य फ्रासिंसी गवर्नर था।
- **1745 में पाण्डीचेरी का फ्रासिंसी गर्वनर डूप्ले था।**
- कर्नाटक के तीन युद्व अग्रेंजों व फ्रासिंसीयों के बीच लड़े गये।
- **फ्रासिंसियों ने चांदा साहब की कर्नाटक के नबाब पद के लिये सहायता की।**
- 1760 में वाण्डीवॉश के युद्व में हार से भारत में फ्रासिंसियों का प्रभुत्व सदा के लिये समाप्त हो गया।
- **बिट्रीश जंगी बेड़ा फ्रासिंसियों की हार का प्रमुख कारण था**

हैदराबाद राज्य

- हैदराबाद राज्य की स्थापना निजाम उल मुल्क आसफ जंहा ने की।

अवध राज्य

- अवध राज्य की स्थापना सादात खां बुरहान उल मुल्क ने की।

मैसूर राज्य

- मैसूर राज्य की स्थापना हैदर अली ने की।
- **प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध 1767-69 में निजाम ने मैसूर को सहयोग किया**
- **द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध मंगलोर की संधि से समाप्त हुआ**

बंगाल राज्य

- बंगाल राज्य की स्थापना मुर्शिद कुली खां ने की।**जो 1717 में बंगाल का गर्वनर था**
- मुर्शीद कुली खां व अलीवर्दी खां ने बंगाल में अग्रेंजों को स्वतन्त्र राज्य करने व किलेबन्दी को मजबूत करने की छूट नहीं दी
- 1756 में सिराजुदौला ने कासिम बाजार व फोर्ट विलियम पर कब्जा करके अग्रेंजों को खदेड़ दिया।
- सिराजुदौला ने फोर्ट विलियम से पकड़े गये 146 अंग्रेजों को एक छोटे से कमरे में बंद कर दिया जिससे 123 अग्रेंज गर्मी व भूख प्यास से मारे गये इस घटना को ब्लैक होल की घटना कहते हैं।
- सिराजुदौला ने कलकता का नाम अलीनगर कर दिया
- 1757 में क्लाईव और एडमिरल वाटसन की सेना ने कलकता को पुन: जीतकर अलीनगर की संधि की।
- अलीनगर की संधि से अग्रेंजो को कर मुक्त व्यापार और सिक्के ढालने की सुविधाएं प्राप्त हुयी।
- 1757 में सिराजुदौला के सेनापति मीर जाफर को अग्रेंजो ने अपनी ओर मिला लिया तथा लार्ड क्लाईव व सिराजुदौला के बीच 1757 में प्लासी का युद्ध हुआ जिसमें सिराजुदौला मारा गया तथा **मीर जाफर को बंगाल का नबाब बनाया।**
- **प्लासी के युद्ध का मुख्य परिणाम बिट्रिश प्रभुत्व की स्थापना थी।**
- मीर जाफर ने अग्रेंजों को 24 परगने की जमींदारी व युद्ध के हर्जाने के रूप में एक करोड़ सतर लाख रूपये दिये।
- **प्लासी के युद्ध से निकासी की प्रक्रिया प्रारंभ हो गयी।**
- 1760 में अग्रेंजो ने मीर जाफर को हटाकर उसके दामाद मीर कासिम को बंगाल का नबाब बना दिया।
- मीर कासिम ने अंग्रेंजों को बर्दवान मिदनापुर और चटगांव की जंमीदारी प्रदान की।
- मीर कासिम ने अग्रेंजों द्वारा दस्तक का दुरपयोग करने से भारतीय कंपनियों को हो रहे नुकसान को रोकने के लिये भारमिय व्यापारियों को भी कर मुक्त व्यापार की छुट प्रदान की।
- 1763 में अंग्रेजों व मीर कासिम के मध्य तीन युद्ध हुए
- मीर कासिम ,शुजाउदौला व शाह आलम की संयुक्त सेना व मेजर हैक्टर मुनरो के नेतृत्व में 22 अक्टूबर 1764 में बक्सर का युद्ध हुआ जिसमें अग्रेंज विजयी हुए तथा मीर कासिम भाग गया अग्रेंजों ने मीर जाफर को वापस नबाब बना दिया।
- **बक्सर के संग्राम से कंपनी का बंगाल पर प्रभुत्व हो गया।**
- 1765 में क्लाईव ने शाह आलम से इलाहाबाद की संधि करके बिहार व उड़ीसा की दीवानी व हैदराबाद के उतरी जिले जागीर के रूप में प्राप्त कर लिए।
- रार्बट क्लाईव भारत में इस्ट ईडिंया कंपनी के शासन का संस्थापक था तथा 1757-60 व 1765-67 दो बार गर्वनर रहा।
- जगत सेठ का बंगाल की अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण था तथा इसने क्लाईव के साथ मिलकर बंगाल पर बिट्रिश आधिपतय की स्थापना में सहयोग किया।
- **बंगाल में द्वैध शासन की शुरूआत रार्बट क्लाईव ने निजामुदौला से इलाहाबाद की संधि करके की जिसमें 1765-72 में बंगाल में दीवानी (कर वसूली) के अधिकार इस्ट ईडिंया कंपनी के पास तथा प्रशासन के अधिकार नबाब के पास थे।**
- वारेन हेस्टिंग्स 1772-85 में बंगाल का गर्वनर बना उसने द्वैध शासन समाप्त कर दिया। तथा नबाब को अपदस्त करके प्रशासनिक अधिकार भी ले लिये।
- वारेन हेस्टिंग्स ने कलकता में सर्वोच्च न्यायालय तथा जिला स्तर पर दीवानी व फौजदारी न्यायालयों की स्थापना करवायी।इसके काल में प्रथम व द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध हुए।

- **वारेन हेस्टिंग्स के काल में 1773 में रेगुलेटिंग एक्ट पास हुआ जो कंपनी के मामलों से संबधित प्रथम महत्वपूर्ण पार्लियामेंटरी एक्ट था जिसमें गर्वनर जनरल की चार सदस्यीय काउंसिल बनी।**
- 1785 में पिटस ईंडिया एक्ट के तहत बोर्ड आफ कन्ट्रोल की स्थापना हुयी।
- **1813 के चार्टर एक्ट से कंपनी का भारतिय व्यापार पर एकाधिकार समाप्त हुआ तथा यह बिट्रेन के सभी नागरिकों के लिये खोला गया।**
- **लार्ड कार्नवालिस ने भारत में सिविल सर्विस की शुरूआत की**

भू राजस्व वसूली व्यवस्था

- अग्रेंजों ने भू राजस्व वसूली की तीन प्रकार की व्यवस्था अपनाई:-
  1. **स्थाई बनदोबस्त:**- 1793 में बंगाल बिहार व उड़ीसा में लार्ड कार्नवालिस का स्थायी बन्दोबसत लागु हुआ जिसके अनुसार सर्वाधिक वसूली वाले जमींदार को 10 वर्षिय बन्दोबस्त करके भूमि का स्वामित्व दे दिया जाता था।कुल कर का 10/11 या 9/10 भाग कम्पनी को प्राप्त होता था।**इस्तमरारी बन्दोबस्त का मुख्य प्रभाव कंपनी को निश्चित लगान था।**
  2. **रैयतवाड़ी व्यवस्था:**- टॉमस मुनरो व रीड की संस्तुति के आधार पर **मद्रास व मुम्बई** में रैयतवाड़ी व्वस्था लागु हुयी जिसके अनुसार कम्पनी सीधे किसान से भू राजस्व वसूलती थी जिसकी दर पहले 33 प्रतिशत थी बाद में 50 प्रतिश्त कर दी गयी।
  3. **महालवाड़ी व्यवस्था:**- पंजाब व दोआब के क्षेत्र में 1822 में शुरू की गयी जिसके तहत महाल या जागीर के मुखिया जिसे लम्बरदार कहते थे से 80 प्रतिशत राजस्व कंपनी में लिया जाता था जो बाद में कम करके 60 प्रतिशत कर दिया गया।

अन्य प्रमुख गवर्नर जनरल

- लार्ड वेलेजली को बंगाल का शेर कहा जाता है उसने सहायक संधि की पद्वति शुरू की जिसके तहत देशी नरेश कम्पनी की सेना तथा बिट्रिश रेजीडेन्ट रखेगें।तथा इसके बदले एक निश्चित रकम कंपनी को देगें।
- दादा भाई नौरोजी ने भारत से धन निकासी पर पावर्टी एण्ड अनबिट्रिश रूल इन ईंडिया पुस्तक लिखि।
- लार्ड मिन्टो प्रथम ने 1809 में अंग्रेजों व महाराजा रणजीत सिंह के बीच अमृतसर की संधि की
- माक्वर्स हेस्टिंग्स ने पिडांरियों का दमन किया मालाबार कनारा कोयम्बटूर व डिंडिगुल में रैयतवाडी व महलवाड़ी दोनों की मिलिजुली व्यवस्था लागु की
- लार्ड लेक को भरतपुर का किला जीतने में कड़ा संघर्ष करना पड़ा परन्तु लार्ड एमस्हर्ट ने भरतपुर के किले पर अधिकार कर लिया
- **लार्ड विलियम बेंटिक ने 1829 में सती प्रथा समाप्त की** तथा 1833 में चार्टर एक्ट के तहत भारत का प्रथम गर्वनर जनरल बना।
- **चार्ल्स मेटकाफ 1835-36 ने भारतीय प्रेस पर प्रतिबन्धों को समाप्त कर दिया तथा भारतीय समाचार पत्रों का मुक्तिदाता कहलाया।**
- **1843 के इण्डिया एक्ट पंचम ने गुलामी पर रोक लगयी**
- प्रथम आंग्ल सिख युद्व 1845-46 में लार्ड हार्डिगं के समय हुआ
- प्रथम आंग्ल अफगान युद्व 1839-42 में लार्ड आकलेण्ड के समय हुआ
- **लार्ड डलहौजी (1848-56)** ने द्वितीय आंग्ल सिख युद्व में **पंजाब का अधिग्रहण 1849** में कर लिया द्वितीय आंग्ल बर्मा युद्व से 1852 में बर्मा का अधिग्रहण कर लिया तथा **हड़पनीति (डोक्ट्रीयन आफ लैप्स)के तहत 1848 में सतारा 1849 में जैतपुर और संभलपुर** 1850 में बघात , 1852 में उदयपुर 1853 में झांसी 1854 में नागपुर को हस्तगत कर लिया
- **डलहौजी ने दुष्प्रशासन के आधार पर अवध का विलय कर लिया।**
- लार्ड डलहौजी के काल में:-

1. **कलकता व आगरा के बीच तार सेवा शुरू**
2. 1854 में डाक कानुन लागु तथा पहली बार डाक टिकट का प्रचलन
3. 1853 में सर्वप्रथम बम्बई और थाणे के बीच रेल लाईन का निर्माण**(रेल सेवा प्रारंभ करने का उददेश्य कंपनी के वितिय हितों की सुरक्षा)**
4. **1854 में शिक्षा संबधि वुड सुधार (डिस्पैच)**

5. भारतीय नागरिक सेवा हेतु प्रथम प्रतियोगिता परीक्षा
6. नाना साहब (धूधूँपत) की पेंशन बन्द जिससे वो अंग्रेजों से नाराज थे।
7. **1856 में हिन्दू विधवा पुनर्विवाह कानुन लागु जो ईश्वरचन्द्र विधासागर के प्रयत्नों का फल**
8. धर्म परिवर्तन के बाद पैतृक सम्पति पर अधिकार समाप्ति का कानुन खत्म
9. **1857 में कलकता मद्रास व बम्बई विश्वविधालयों की स्थापना**

1857 की क्रान्ति

- कम्पनी की विस्तारवादी व साम्राज्यवादी नीति, डलहौजी की हड़प नीति के कारण देशी राजाओं में भय, अवध व अन्य कई राज्यों का बिट्रिश राज्य में विलय, कम्पनी का अकुशल व अत्याचारी प्रशासनिक तन्त्र, भू राजस्व व्यवस्था के प्रति असंतोष, किसानों की खराब दशा नील व अन्य नगदी फसलें उगााने की जबरदस्ती, मिशनरियों द्वारा इसाई धर्म का प्रचार व धर्मान्तरण ,अन्य धर्म अपनाने पर भी पैतृक सम्पति में अधिकार, सैनिकों की समुद्र पार देशों में जाने की अनिवार्यता, नई इनफील्ड रायफल में चर्बी युक्त कारतुसों का प्रयोग 1857 की क्रान्ति के मुख्य कारण थे।
- प्रचार के लिये रोटी व कमल के फुल प्रतिक का प्रयोग
- 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी से प्रारम्भ
- 34 वीं नेटिव इनफैन्ट्री रेजिमेन्ट के सैनिकों ने चर्बी युक्त कारतुसों को प्रयोग करने से ईकार कर दिया
- मंगल पाण्डे ने अंग्रेंज सार्जेन्ट हयूरसे व लेफटीनेन्ट बाघ को गोली मार दी
- 26 फरवरी को भी बंगाल में 19 वीं नेटिव इन्फेन्ट्री ने विद्रोह किया था।
- 10 मई को मेरठ के सैनिकों ने खुला विद्रोह कर दिया तथा दिल्ली में बहादुरशाह जफर को भारत का सम्राट घोषित कर दिया जिसने बख्त खां को सैनिक नेतृत्व सौंपा। जहां जोन निकल्सन व हडसन ने विद्रोह का दमन किया
- **कानपुर में क्रान्ति का नेतृत्व पेशवा बाजीराव द्वितीय के दतक पुत्र नाना साहब (धूँधूपंत) ने किया**।नाना साहब के सहयोगी अजीमुल्ला खां ने विदेशों से समर्थन प्राप्त करने का प्रयास किया तथा तांत्या टोपे अग्रेंजों के विरूद्व गुरील्ला युद्व लड़े।यहां जनरल हैवलोक ने विद्रोह का दमन किया
- लखनउ में क्रान्ति का नेतृत्व बेगम हजरत महल ने किया तथा अपने नाबालिक पुत्र विजरिस कादर को नबाब घोषित किया यहां कोलिन केम्पवेल ने विद्रोह का दमन किया तथा बेगम नेपाल चली गई
- बुन्देलखण्ड में झांसी के शासक गंगाधर राव की पत्नी **लक्ष्मी बाई** ने विद्रोह का नेतृत्व किया तथा **तांत्या टोपे की मदद से ग्वालियर पर अधिकार कर लिया** जिसका दमन जनरल हयूमरोज ने किया तथा कहा विद्रोह करने वालों में वह अकेली मर्द थी।
- बरेली में खान बहादुर खां ने स्वंय को रूहेलखडं का नबाब घोषित कर दिया इसका दमन कोलिन कैम्पवेल ने किया
- फैजाबाद में मौलवी अहमदुल्ला, व बिहार में जगदीशपुर के 80 वर्षिय जमींदार कुवंर सिंह ने अंग्रेजों को कड़ी टक्कर दी
- इलाहाबाद में मौलवी लियाकत अली का विद्रोह कर्नल नील ने दबाया
- 20 सितम्बर 1857 को अग्रेंजों ने दिल्ली पर वापस अधिकार कर लिया बहादुरशाह जफर को बंदी बनाकर रंगून भेज दिया तथा 7 नवंबर 1862 को रंगून में ही बहादुरशाह जॅफर की मृत्यू हो गयी।
- 1858 की उदघोषणा से बिट्रीश क्राउन ने भारत का शासन अपने अधिन ले लिया
- **1857 की क्रान्ति की असफलता का प्रमुख कारण नेतृत्व का अभाव था**
- **वी.डी. सावरकर ने 1857 के युद्व को भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की संज्ञा दी**

भारत के प्रमुख वायसराय

- 1858 के अधिनियम से गर्वनर जनरल के स्थान पर वायसराय की नियुक्ति लार्ड कैनिंग प्रथम वायसराय
- लार्ड लोरेंस ने अफगानिस्तान के मामले में स्पष्ट असहयोग की नीति अपनायी इसे शानदार निष्क्रियता के नाम से जाना जाता है।
- लार्ड लिटन विद्वानों में ओवैन मेरेडिथ के नाम से जाना जाता था।उसके काल में 1876-78 में बम्बई व मद्रास में भयंकर अकाल पड़े उसके काल में महारानी विक्टोरिया को केसर ए हिन्द की उपाधि देने के लिये शानदार दिल्ली दरबार का आयोजन हुआ लार्ड लिटन ने ही 1878 में भारतीय भाषाओं के अखबारों पर

वर्नाकुलर प्रेस एक्ट से विभिन्न प्रकार के प्रतिबंध लगााए। सिविल सेवा में प्रवेश की आयु 21 से घटाकर 19 वर्ष कर दी।

- लार्ड रिपन सर्वाधिक लोकप्रिय वायसराय 1882 में वर्नाकुलर प्रेस एक्ट को समाप्त किया सिविल सेवा की आयु वापस 21 वर्ष की अफगाान युद्व समाप्त करवाया लार्ड मेयो की आर्थिक हस्तान्तरण नीति को वापस शुरू किया। स्थानिय स्वशासन को शुरू किया कारखाना अधिनियम पारित किया तथा विलियम हण्टर की अध्यक्षता में शिक्षा आयोग का गठन किया लार्ड रिपन के द्वारा यूरोपियों के मुकदमों में भारतिय न्यायाधीशों द्वारा सुनवाई के लिये इल्बर्ट बिल लाया गया जिसे भारी विरोध के कारण वापस ले लिया।
- **1822 में बेगम समरू ने सरधाना में एक चर्च का निमार्ण करवाया**
- **अजमेर का मेयो कालेज राजपरिवारों की शिक्षा के निमित बना था**
- लार्ड डफरिन के काल में 1885 में ए.ओ. हयुम ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना बंबई में की गयी। जो प्रथम सचिव भी थे ।
- प्रारंभ में कांग्रेस बिट्रीश शासन का विरोध नहीं करके उसे भारतियों की जरूरतों से अवगत कराती थी इसी लिये 1885-1905 का कग्रेस का काल राजनीतिक भिक्षावृति का काल कहलाता है।1905-1919 का काल उग्रवाद काल तथा 1919-1947 का काल गांधीवाद का काल कहलाता है।
- **कांग्रेस प्रारंभिक अवस्था में मजदूर समस्या से उदासीन थी।**
- कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन के अध्यक्ष व्योमेश चन्द्र बनर्जी थे।
- **कांग्रेस का तीसरा अधिवेशन 1887 में मद्रास में हुआ।**
- **1921 के काग्रेंस के अहमदाबाद अधिवेशन की अध्यक्षता हकीम अजमल खां ने की।**
- **बदरूदीन तैयब जी कांग्रेस से संबधित थे।**
- अरविन्द घोष की कृति न्यू लैम्पस फोर ओल्ड में कांग्रेंस के तौर तरीकों की आलोचना की है।
- **बाल गंगाधर तिलक ने गणेश उत्सव व शिवाजी उत्सव मनाने की शुरूआत की** और स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है नारा दिया। **बाल गंगाधर तिलक केसरी अखबार का सम्पादन करते थे।तिलक को भारतिय असंतोष का जनक कहा जाता है।**
- लार्ड लैसंडाउन ने लड़कियों के विवाह की आयु 10 वर्ष से बढ़ाकर 12 वर्ष की।
- लार्ड कर्जन सर्वाधिक अलोकप्रिय वायसराय था।1902 में विश्वविधालय आयोग की स्थापना की तथा दुर्भिक्ष आयोग का गठन किया सिंचाई आयोग का गठन भी किया 1905 में बंगाल का विभाजन कर दिया
- **बंगाल विभाजन:-**16 अक्टूबर 1905 को जिस दिन बंगाल विभाजन लागु हुआ उस दिन को शोक दिवस के रूप में मनाया गया। विरोध में रविन्द्रनाथ टैगोर के नेतृत्व में सामूहिक रूप से राखी बंधन किया गया।विदेशी माल का विरोध किया गया। कलकता विश्वविधालय को गुलाम खाना कहकर विरोध किया तथा अगसत 1906 में राष्ट्रीय शिक्षा परिषद की स्थापना की।इस आन्दोलन का मुख्य नारा वंदे मातरम था।
- **1906 में युगान्तर समाचार पत्र ने आव्हान किया कि शक्ति को शक्ति से रोका जाए**
- 30 दिसम्बर 1906 में मुस्लिम लीग की नबाब बकासुलमुल्क की अध्यक्षता में स्थापना लार्ड मिण्टो द्वितीय के काल में हुयी । मुस्लिम लीग ने बहिष्कार की निदां की तथा बिट्रीश सरकार में निष्ठा व्यक्त की।
- **1909 में मार्ले मिण्टो सुधार हुए।जिनमें मुसलमानों के लिये अलग निर्वाचन मण्डल की व्यवस्था की गयी।**
- कांग्रेस के 1907 के सूरत अधिवेशन में फूट पड़ गयी तथा साम्प्रदायिक प्रतिनिधित्व की शुरूआत हुयी।
- लार्ड हार्डिगं ने दिल्ली में जार्ज पंचम के सम्मान में 12 दिसम्बर 1911 को दिल्ली में अभिषेक दरबार करवाया । इसमें बंगाल विभाजन रद्द करने तथा राजधानी कलकता से दिल्ली लाने की घोषणा हुयी दिसम्बर 1912 में राजधानी दिल्ली ले आयी गयी तथा 1911 से 1914 तक प्रथम विश्व युद्व शुरू हुआ।
- लार्ड चेम्सफोर्ड के काल में 1919 में दमनकारी रौलेट एक्ट आया तथा 13 अप्रैल 1919 को जलियांवाला बाग हत्याकांड हुआ। भारत सरकार अधिनियम या मान्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार 1919 मे किये गये।
- लार्ड रीडिंग के काल में 1 फरवरी 1922 को सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरूआत 5 फरवरी को चौरा चौरी में 22 पुलिस कर्मियों की हत्या से गांधी जी ने आन्दोलन वापस ले लिया गांधी जी को छः वर्ष के कारावास की सजा सुनाई गई। **दिसम्बर 1922 में देशबन्धु चितरंजन दास की अध्यक्षता में स्वराज्य पार्टी का गठन हुआ मोतीलाल नेहरू भी स्वराज पार्टी के नेता थे।**
- **साइमन कमीशन :-**लार्ड इर्विन के काल में साईमन कमीशन 3 फरवरी 1928 में भारत आया
- **साइमन कमीशन के आगमन का मुख्य उददेश्य उतरदायी सरकार के गठन की धारणा प्रकट करना**

- साइमन कमीशन का बहिष्कार करने पर भारत मंत्री लार्ड बर्कन हैड ने भारतियों को सर्वमान्य संविधान बनाने की चुनौति दी जिस पर मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में गठित समिति ने 1928 में नेहरू रिपोर्ट दी जिसमें औपनिवेशिक स्वराज्य, धर्मनिरपेक्ष राज्य केन्द्र में पूर्ण उतरदायी शासन ,प्रान्तीय स्वायतता, मौलिकअधिकार आदि मुख्य बिन्दू थे।
- **मेरठ षडयंत्र केस 1929 मजदूर संगठन के नेताओं के विरूद्व था।**
- नेहरू रिपोर्ट की कई बातों को मुस्लिम विरोधी बताते हुये जिन्ना ने सितम्बर 1929 में 14 शर्तो वाला जिन्ना फार्मुला दिया।
- **जिन्ना असहयोग आन्दोलन व खिलाफत आन्दोलन में शामिल नहीं हुआ।**
- द्वितीय सविनय अवज्ञा आन्दोलन मार्च 1930 में हुआ ।प्रथम गोलमेज सम्मेलन 1930 में हुआ।
- गांधी इर्विन समझौता 1931 में हुआ।
- लार्ड वेलिंगटन के काल में **द्वितीय गोलमेज सम्मेलन 1932** व पूना समझौता 1932 में हुआ **द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में गांधी जी कांग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित हुए।**
- लार्ड लिनलिथगो के काल में 1942 में क्रिप्स मिशन भारत आया तथा 8 अगसत 1942 को भारत छोड़ो आन्दोलन की शुरूआत हुयी।
- कैबिनेट मिशन 1946 में लार्ड वेवेल के काल में भारत आया।
- अतिंम बिट्रीश वायसराय व स्वतन्त्र भारत के प्रथम गर्वनर जनरल लार्ड माउन्टबैटन थे।
- स्वतन्त्र भारत के अतिंम गर्वनर जनरल व प्रथम भारतीय गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य थे।

प्रमुख विद्रोह

विद्रोह	**संस्थापक**
बहाबी आन्दोलन(1820-70)	अब्दूल बहाब(भारत में सैयद अहमद रायबरेलवी)
अहोम विद्रोह (1828-30)	गोमधर कुंवर
खासी विद्रोह(1829-33)	राजा तीरतसिंह
फराइजी (हाजी शरीयतुल्ला द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय)विद्रोह(1838-57)	दूदूमिंया
पागलपंथी विद्रोह (1813-33)	कमरशाह
सांवतवाड़ी विद्रोह (1844)	फोन्ड सांवत
संथाल विद्रोह (1855-56)	सीदू व कान्हू
भुयान व जुआंग विद्रोह (1867-68 ,1891-93)	रत्न नायक
कूका आन्दोलन(1840-70)	भगत जवाहरमल
रंपा विद्रोह (1916-24)	अल्लूरी सीताराम राजु
मुंडा विद्रोह(1899-1900)	**बिरसा मुंडा**
भील विद्रोह राजस्थान (1913)	गोविन्दराज
नील आन्दोलन (1859-60)	दिग्मबर विश्वास और विष्णु विश्वास
मोपला विद्रोह (1921में **मालाबार में)**	अली मुसलियार
रामोसी विद्रोह (1877)	वासुदेव बलवन्त फड़के

- बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय ने सन्यासी विद्रोह की पृष्ठभूमि पर आनंद मठ उपन्यास की रचना की
- 19 वीं शताब्दी में पश्चिमी शिक्षा और जागृति सामाजिक और धार्मिक सुधारों के महत्वपूर्ण कारण थे।
- **चम्पारण सत्याग्रह:-**महात्मा गांधी का भारत में प्रथम आन्दोलन था जो नील किसानों पर आरोपित तिनकठिया प्रणाली के विरोध में था जिसमें भूमि के 3/20 भाग पर नील की खेती अनिवार्य थी। 1917 में राजकुमार शुक्ला व बाबु राजेन्द्र प्रसाद के अनुरोध पर किया था।
- **खेड़ा आन्दोलन:-**1918 में गुजरात में सुखे के बावजुद भुराजस्व वसूली के विरोध में गांधी जी के नेतृत्व में लड़ा गया था इसमें इन्दुलाल याज्ञिक व सरदार पटेल गांधी जी के साथ थे।
- **बारदोली आन्दोलन:-** गुजरात में लगान में 30 प्रतिशत बढ़ोतरी करने के विरोध में **सरदार वलभ्भ भाई पटेल के नेतृत्व में लड़ा गया।**इसमें काली पराज(काले जनजाती लोग) ने भी भाग लिया इसमें मैक्सवेल ब्रुमफीड की जांच रिपोर्ट के बाद लगान की दरें कम कर दी गयी। महात्मा गांधी ने भी इस आनदोलन को समर्थन दिया था।

- **बिजौलिया किसान आन्दोलन ने वर्तमान भारत के किसान आन्दोलन को प्रभावित किया।**
- **1875 का दक्कन विद्रोह किसान आन्दोलन था।**
- **बंगाल का तेभागा आन्दोलन गरीब किसानों से संबधित था**
- **राजस्थान में मारवाड़ में सबसे पहलें किसान आन्दोलन प्रारंभ हुआ**
- **अखिल भारतीय किसान सभा:**–स्वामी सहजानंद ने 1936 में स्थापना की एन.जी.रंगा इसके प्रथम महासचिव थे।
- **ब्रह्म समाज:- 1828 में राजा राम मोहन राय ने स्थापना की**
- **राजा राम मोहन राय को आधुनिक भारत का अग्रदूत(पिता)** व आधुनिक पत्रकारिता का जनक कहा जाता है।इन्होने सती प्रथा का विरोध किया व 1816 में कलकता में हिनदू कालेज की स्थापना की सम्वाद कौमुदी इनकी मुख्य पत्रिका थी।
- **प्रार्थना समाज:-** यह ब्रह्म समाज की शाखा थी परन्तु केशवचन्द्र सेन की प्रेरणा से 1928 में महादेव गोविन्द रानाडे और आत्माराम पांडुरंग ने बम्बई में प्रार्थना समाज की स्थापना की
- **केशवचन्द्र सेन ने ब्रहम समाज को एक सम्पूर्ण भारतीय आन्दोलन बना दिया**
- आर्य समाज की स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने 1875 में बम्बई में की।**आर्य समाज का विश्वास था कि तीर्थ यात्रा व्यर्थ है और यह अंधविश्वास दर्शाती है।**
- **आर्य समाज का शुद्वि आन्दोलन को समर्थन प्राप्त था।**
- **दक्षिण भारत में वेद समाज ने जाति प्रथा का विरोध किया।**
- **बीरेशंलिगंम ने विधवा गृह की स्थापना की।**
- स्वामी दयानंद सरस्वती स्वामी विरजानंद के शिष्य थे।
- लाला हंसराज ने 1886 में लाहौर में डी.ए.वी. कालेज की स्थापना की।
- स्वामी श्रदांनद ने 1901 में हरिद्वार में गुयकुल कांगड़ी विश्वविधालय की रूथापना की।
- 1839 में तत्वबोधधिनि सभा की स्थापना देवेन्द्रनाथ टैगोर ने की
- **1875 में मैडम ब्लावेटस्की व कर्नल ऑल्कॉट ने न्यूयार्क में थियोसोफिकल सोसायटी की स्थापना की भारत में 1882 में अंडयार में इसका मुख्यालय स्थापित हुआ** जिससे एनी बेसेन्ट भी जुड़ी और सोसायटी के प्रयासों से बनारस में सेन्ट्रल हिन्दू स्कूल की स्थापना हुयी।
- 1784 में सर विलियम जोन्स ने एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल की स्थापना की
- 1851 में पारसी धर्म से संबधित रहनुमाई माजदायन सभा की स्थापना नौरोजी फरदोन व दादाभाई नौरोजी ने की।
- 1857 में बाबा रामसिंह व बाबा बालक सिंह ने नामधारी आन्दोलन की शुरूआता की
- **अलीगढ़ आन्दोलन के प्रवर्तक सर सैयद अहमद खां थे।**
- अहमदिया आन्दोलन के प्रणेता मिर्जा गुलाम अहमद स्वय को मसीह उल अद अर्थात पैग्म्बर का पुन: अवतार और कृष्ण का अवतार कहते थे।
- 1867 में मुहम्मद कासिम ननोतवी और रशीद अहमद गंगोही ने देवबंद आन्दोलन की शुरूआत की।
- 1873 में ज्योतिबा फुले ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की इन्होने गुलाम गिरी पुस्तक भी प्रकाशित की।

स्वतन्त्रता संग्राम की मुख्य घटनाएं

- 1907 के कांग्रेस की सूरत अधिवेशन में तिलक को बोलने नहीं दिया गया तथा रास बिहारी बोस को अध्यक्ष चुन लिया गया जिससे उग्रवादी गुट लाल,बाल,पाल कग्रेस से अलग हो गये।
- 1916 में लखनउ समझौता कांग्रेस व मुस्लिम लीग के बीच हुआ।
- एनी बेसेन्ट व बाल गंगाधर तिलक ने 1916 में होमरूल लीग आन्दोलन की शुरूआत की तथा एनी बेसेनट ने साप्ताहिक पत्रिका कॉमनवील के प्रकाशन से इसका प्रचार किया।**एनी बेसेंट होमरूल लीग की प्रथम अध्यक्ष थी।आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य स्वशाषन की मांग को लोकप्रिय करना था।**
- रोलेट एक्ट 1919 में आया जिसमें भारतियों को सन्देह के आधार पर गिरफतार किया जा सकता था।
- 9 अप्रैल 1919 को पंजाब में दो नेताओं डा0 सत्यपाल व डा सैफुदीन कीचलु को पंजाब से निष्कासित कर देने के विरोध में 13 अप्रैल 1919 को वैसाखी के पर्व पर अमृतसर के जलियावाला बाग में हो रही सभा पर जनरल डायर के नेतृत्व में गोलियां बरसाने से 1000 लोग मारे गये रविन्द्रनाथ टैगोर ने इस

घटना के विरोध में नाईटकी उपाधि लौटा दी तथा शंकरन नायर ने वायसराय की कार्यकारिणी से इस्तिफा दे दिया।

- भारत में किसी यूरोपिय की प्रथम राजनीतिक हत्या 22 जून 1897 का पूना में चापेकर बन्धुओं द्वारा रैड और एयर्स्ट की हत्या थी।
- 1904 में गणेश दामोदर सावरकर ने अभिनव भारत की स्थापना की
- सावरकर को जेल की सजा सुनाने पर अभिनव भारत के सदस्य लक्ष्मण कान्हरे ने मजिस्ट्रेट जैक्सन की हत्या करदी इस आरोप में 27 लोगों पर मुकदमा चला जिसे नासिक षडयन्त्र केस के नाम से जाना जाता है।
- अनुशीलन समिति की स्थापना पी.मित्रा ने की।
- भारत का प्रारंभिक तिरंगा स्टूआर्ट (जर्मनी) में मैडम भीका जी कामा ने फहराया।
- **हिन्द एसोसियेशन आफ अमरीका की स्थापना लाला हरदयाल व सोहनसिंह माकना ने की जिसका नाम बाद में गदर पार्टी हो गया।**
- 1919 में खिलाफत आन्दोलन तुर्की में बिट्रेन के सहयोग से खलीफा की सता समाप्त कर देने के कारण मुस्लिम लीग ने चलाया तथा 17 अक्टॅबर 1919 को अखिल भारतीय खिलाफत दिवस मनाया। **अली बन्धु (मुहम्मद अली व शौकत अली)खिलाफत आन्दोलन से संबधित है।**
- महात्मा गांधी के नेतृत्व में सबसे बड़ा जन आन्दोलन 1920-22 का असहयोग आन्दोलन था।**जिसमें गांधी जी ने एक वर्ष में स्वराज का नारा दिया**

- न्यायाधीश किंग्सफोर्ड पर प्रफुल्ल चाकी व खुदीराम बोस ने बम फैंका।
- अलीपुर बमकाण्ड में अरविन्द घोष व बारीन्द्र घोष मुख्य अभियुक्त थे।
- भारत माता समिति की स्थापना नीलकण्ठ ब्रहमचारी व वंची अययर ने की।
- लार्ड हार्डिगं पर बम फैंकने की योजना रास बिहारी बोस ने बनायी थी जो बचकर जापान चले गये परन्तु इस काण्ड में अमीर चन्द्र , अवध बिहारी, व बसन्त कुमार विश्वास को फांसी की सजा हो गयी।
- इण्डियन सोशियोलोजिस्ट पत्र श्याम जी कृष्ण वर्मा ने निकाला
- विलियम कर्जन वेयली की हत्या मदनलाल धींगरा ने की
- गांधी जी 1915 में द0अफ्रिका से भारत आये।
- 1916 में गांधी जी ने साबरमती आश्रम की स्थापना की
- 1917 में चम्पारन में प्रथम सत्याग्रह किया।
- 1919 के कांग्रेस अधिवेशन में गांधी जी की सलाह पर ही माण्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुझाव को अस्वीकार कर दिया।
- **1920 में लाला लाजपतराय की अध्यक्षता मेंआल इण्डिया ट्रेउ यूनियन कांग्रेस की स्थापना हुयी**
- काकोरी काण्ड में 29 क्रान्तिकारियों को गिरफतार करके रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां,रोशन लाल व राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी को फांसी की सजा दे दी गयी तथा चन्द्रशेखर आजाद बचकर छिपे रहे।
- साइमन विरोधी आन्दोलन के दौरान भीड़ पर लाठीचार्ज के आदेश देने वाले लाहौर के पुलिस कप्तान साण्डर्स को 17 नवम्बर 1928 को भगत सिंह ने गोली मार दी
- लाहौर षडयन्त्र केस में 23 मार्च 1931 को भगतसिंह , सुखदेव और राजगुरू को फांसी की सजा दे दी गयी।
- 27 फरवरी 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में घिर जाने पर चन्द्रशेखर आजाद ने स्वंय को गोली मार ली।
- चंटगावं शस्त्रागार हमला सूर्यसेन ने किया
- फरवरी 1932 को कलकता विश्वविधालय के दीक्षांत समारोह में उपाधि ग्रहण करते समय बीना दास ने बंगाल के गवर्नर को गोली मार दी।
- त्रिपुरी अधिवेशन के बाद सुभाष चन्द्रबोस ने कांग्रेस अध्यक्ष पद से इस्तिफा देकर 1939 में फारवर्ड ब्लाक की स्थापना की।**सुभाष चन्द्र बोस के इस्तीफा देने के बाद राजेन्द्र प्रसाद अध्यक्ष चुने गये।**
- **केसरी सिंह बारहठ ने स्वतन्त्रता संग्राम में अपने पूरे परिवार को न्योछावर कर दिया।**
- **1944 में कस्तूरबा की जेल में मौत हो गयी।**

- **बिट्रिश शासन भारत को अनुधोगीकरण की तरफ ले गया।**

पूर्ण स्वराज्य का लक्ष्य

- **दिसंबर 1929 को कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य का प्रस्ताव पारित किया गया।**
- **पूर्ण स्वराज्य अधिवेशन की अध्यक्षता जवाहरलाल नेहरू ने की**
- 26 जनवरी 1930 को पूर्ण स्वराज्य दिवस घोषित किया तथा इस दिन रावी नदी के तट पर लाहौर में जवाहरलाल नेहरू ने तिरंगा फहराया तथा गांधी जी द्वारा तैयार की गयी पूर्ण स्वराज्य शपथ ली गयी।

डांडी यात्रा

- 12 मार्च 1930 को अपने 78 सहयोगियों के साथ गांधी जी ने साबरमती आश्रम से सूरत जिले(वर्तमान में नवसारी जिले) के डांडी नामक स्थान तक यात्रा की
- 358 किमी लम्बे इस पैदल मार्च में 25 दिन बाद 6 अप्रैल को डांडी पहुंचकर गांधी जी ने समुद्र तट पर नमक बनाकर कानुन तोड़ा **जिससे सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारंभ हुआ 1931 में गांधी इर्विन समझौते के कारण सविनय अवज्ञा आन्दोलन स्थगित कर दिया गया**
- **गांधी इर्विन समझौते की आलोचना का मुख्य कारण देशभक्तों को फांसी की सजा का अभाव था।**
- सुभाष चन्द्र बोस ने गांधी जी के इस अभियान की तुलना नेपोलियन के एल्बा से पेरिस अभियान से की।

खुदाई खिदमतगार संस्था

- स्थापना सीमान्त गांधी कहलाने वाले खान अब्दुल गफफार खां ने की।
- इसके सदस्य लाल कुर्ती पहनते थे इसलिये लाल कुर्ती आनदोलन भी कहलाया
- इनका आन्दोलन गांधी जी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन का ही भाग था।

मुक्ति दिवस

- **1935 के भारत सरकार अधिनियम के तहत 1937 में असेम्बलियों के चुनाव हुए जिसमें पंजाब बंगाल, आसाम व सिन्ध के अलावा सभी असेम्बलियों में कांग्रेस की सरकारें बनी।1935 के भारत सरकार अधिनियम ने द्वैध शासन का अंत किया**
- पंजाब बंगाल व सिन्ध में मुस्लिम लीग की सरकारें बनी
- बिट्रिश सरकार द्वारा भारतीय मंत्रिमण्डलों से परामर्श किये बिना ही भारत को द्वितीय विश्व युद्ध में शामिल कर देने की घोषणा से नाराज कांग्रेस मत्रिमण्डलों ने 22 दिसम्बर 1939 को सामूहिक त्यागपत्र दे दिया।मुस्लिम लीग ने इस त्यागपत्र से प्रसनन होकर यह दिन मुक्ति दिवस के रूप में मनाया।

अगस्त प्रस्ताव (1940)

- द्वितीय विश्व युद्ध में भारतियों का सहयोग प्रापत करने के लिये लार्ड लिनलिथगो ने 8 अगसत 1940 को एक प्रस्ताव रखा जिसे अगस्त प्रस्ताव के नाम से जाना जाता है।
- जिसमें वायसराय की कार्यकारिणी परिषद में भारतियों की अधिक संख्या युद्ध सलाहाकार परिषद तथा युद्ध के बाद संविधान सभा के गठन की बाते थी।
- कांग्रेस ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

व्यक्तिगत सत्याग्रह

- 17 अक्टूबर 1940 को पवनार में व्यक्तिगत सत्याग्रह की शुरूआत
- **विनोबा भावे प्रथम व्यक्तिगत सत्याग्रही थे।**

क्रिप्स मिशन(1942)

- 22 मार्च 1942 को स्टैफर्ड क्रिप्स के नेतृत्व में भारत आया।
- क्रिप्स मिशन ने युद्ध के बाद औपनिवेशिक स्वराज्य, **संविधान सभा का गठन** तथा प्रान्तों को संविधान को स्वीकार या अस्वीकार करने के अधिकार का प्रस्ताव रखा।
- महात्मा गांधी/जवाहरलाल नेहरू ने क्रिप्स मिशन के प्रस्तावों को दिवालिये बैंक के नाम उतर तिथीय चैक की संज्ञा दी।

भारत छोड़ो आन्दोलन 1942

- जुलाई 1942 को काग्रेंस कार्यसमिति की वर्धा बैठक में भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित किया गया।
- 7 अगस्त 1942 को काग्रेंस के मुम्बई अधिवेशन में वर्धा प्रस्ताव की पुष्टि की।

- 8 अगस्त 1942 को बम्बई के ग्वालिया टेंक मैदान (वर्तमान अगस्त क्रान्ति मैदान)में गांधी जी ने आन्दोलन की शुरूआत करते हुये करो या मरो का नारा दिया।
- इसकी व्यापकता के कारण इसे महान अगस्त क्रान्ति कहते है।
- **साम्यवादियों ने भारत छोड़ो आन्दोलन में असहयोग किया।(हिन्दू महासभा ने भी असहयोग किया था)**
- **चर्चिल ने कहा था कि वे बिट्रिश साम्राज्य के समापन की अध्यक्षता करने के लिये सम्राट के प्रथम मंत्री नहीं बने।**

पाकिस्तान की मांग

- **1930 में मुस्लिम लीग के इलाहाबाद अधिवेशन में सर मो0 इकबाल ने सर्वप्रथम मुस्लिम देश की स्थापना की बात की।**
- पाकिस्तान शब्द कैम्ब्रिज विश्वविधालय के कुछ मुस्लिम छात्रों व चौधरी रहमत अली ने 1933 में दिया।
- मार्च 1940 में मुस्लिम लीग के लाहौर अधिवेशन में पृथक मुस्लिम देश पाकिस्तान की मांग का प्रस्ताव पास किया गया।

आजाद हिन्द फौज

- इण्डियन इण्डिपेंडेंस लीग के तहत गठन रास बिहारी बोस ने मार्च 1942 में
- नेतृत्व कैप्टन मोहन सिंह
- रास बिहारी बोस ने जून 1943 में सुभास चन्द्र बोस को इण्डियन इण्डिपेंडेंस लीग का अध्यक्ष व आजाद हिन्द फौज का सर्वोच्च कमांडर बनाया।
- 21 अक्टूबर 1943 को सुभास चन्द्र बोस ने सिंगापुर में अस्थाई आजाद हिन्द सरकार का गठन किया।
- उन्होने कांग्रेस का तिरंगा झण्डा स्वीकार किया और जयहिन्द का नारा दिया।
- दिल्ली चलो व तुम मुझे खुन दो मै तुम्हें आजादी दूगां का आहवान किया।
- रेडियो सिंगापुर से अपने सम्बोधन में सुभाष चन्द्र बोस ने महात्मा गांधी को सर्वप्रथम राष्ट्रपिता कहा।
- दिल्ली के लालकिले में आजाद हिन्द फौज के युद्धबंदियों पर आई.एन.ए.अभियोग चलाया गया जिसमें पी.के. सहगल, कै.शाहनवाज खान, तथा लेफटीनेंट गुरूबख्श सिंह ढिल्लो पर मुकदमा चलाया गया।
- आई.एन.ए. केस में सर तेज बहादुर स्प्रू, भुला भाई देसाई, जवाहरलाल लाल नेहरू व आसिफ अली ने वकील के रूप में बचाव किया
- वायसराय लार्ड वेवेल ने जनवरी 1946 में अभियुक्तों को जनता के आक्रोश के कारण माफ कर दिया।

वेवेल योजना (1945)

- 14 जून 1945 को वेवेल ने रखी।
- इस योजना में विदेश मामलों को प्रभार वायसराय की कार्यकारणी में भारतिय सदस्य को तथा वायसराय का वीटो न्यूनतम करने व संविधान निमार्ण के प्रस्ताव थे।

केबिनेट मिशन(1946)

- 16 मई 1946 को प्रस्ताव दिया
- प्रान्तों व रियासतों की स्वायतता तथा संविधान सभा के निमार्ण का सुझाव दिया।
- कांग्रेस ने संविधान सभा के प्रस्ताव को स्वीकार कर शेष मुद्दों को खारिज कर दिया मुस्लिम लीग ने पहले सहमति दिखायी बाद में सहमति वापस ले ली।

अतंरिम सरकार (1946)

- लार्ड वेवेल ने 2 सितम्बर 1946 को जवाहरलाल नेहरू को प्रान्तिय असेम्बलियों में कांग्रेस के भारी बहुमत के बाद 12 मंत्रियों जिनमें 3 मुस्लिम थे सहित अतंरिम सरकार की शपथ दिलायी।
- पहले मुस्लिम लीग सरकार में शामिल नहीं हुयी परन्तु बाद में उसके तैयार होने पर कांग्रेस के 5 मंत्रियों ने पद छोड़कर मुस्लिम लीग के मंत्रियों को जगह दी।

प्रधानमंत्री एटली की घोषणा

- 20 फरवरी 1947 को बिट्रिश संसद में लार्ड एटली ने जून 1948 के जहले भारत छोड़ने की घोषणा की

माउंटबैटन योजना (3जून 1947)

- 3 जून 1947 को भारत विभाजन के साथ सता हस्तांतरण तथा भारत पाकिस्तान सीमा आयोग के गठन की लार्ड मांउटबेंटन ने घोषणा की।

- 18 जुलाई 1947 को बिट्रिश संसद ने मांउटबेंटन योजना स्वीकार कर भारतीय स्वतन्त्रता अधिनियम पारित किया जिसके अनुसार 15 अगस्त 1947 को भारत व पाकिस्तान दो स्वतन्त्र देश होने की घोषणा की गयी
- 15 अगस्त 1947 को लाल किले से यूनियन जैक उतार कर भारतिय तिरंगा फहरा दिया गया।

भारत का एकीकरण व संविधान निमार्ण

- 26 नवंबर 1949 को संविधान सभा ने संविधान अंगीकृत किया
- 26 जनवरी 1950 को संविधान लागु हुआ।
- हैदराबाद के निजाम के विरूद्व पुलिस कार्यवाही हुयी
  गर्वनर जनरल का पद समाप्त कर डा राजेन्द्र प्रसाद देश के प्रथम राष्ट्रपति बने।
  - **भीमराव अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म अपनाया**
  - **1950-54 में फ्रांसिसी क्षेत्र भारतीय सता में स्थनान्तरित हुए।**

संविधान संबधि

1956 के हिन्दू सक्सेशन एक्ट से पुत्री को पुत्र के समान उतराधिकारी माना गया है।
सविंधान की धारा 14 व 15 महिला व पुरूष को बराबरी का दर्जा छेती है।
एक इतिहास राष्ट्रवाद का ऐसा तत्व है जो आज भी अनुरूप है।

चित्रकला की शैलियां

उमेद सिंह कोटा शैली का महान आश्रयदाता था
निहालचंद किशनगढ़ शैली का प्रसिद्व चित्रकार है।